Kali Nadi News

नदी संसद करेगी काली का कल्याण

सभी नौ जिलों में गठित होगी समिति, हर छह महीने में नदी संसद की बैठक में समीक्षा की योजना

रवि प्रकाश तिवारी • मेरठ

काली नदी को जिंदा करने का जो भगीरथ प्रयास इन दिनों चल रहा है उसमें प्रशासनिक और सामाजिक दोनों ही ओर से महती भागीदारी निभाई जा रही है। नदी की साफ-सफाई और उसकी राह को खाली कराने के बाद उसकी धार कल-कल कर बहती रहे, इसकी खातिर भविष्य में भी साझा प्रयास की जरूरत पड़ेगी। इसी को ध्यान में रखते हुए अब नदी संसद के गठन की योजना पर भी बात उठने लगी है। इससे मिलते जुलते मॉडल पर ही राजस्थान की अरवरी नदी को पुनर्जीवित किया जा चुका है। नदी संसद के तौर पर राजस्थान में अलवर जिले की अरवरी एक बड़ी मिसाल है। काली के लिए भी कुछ उसी मार्ग पर चलने की तैयारी हो रही है।

काली नदी मुजफ्फरनगर से निकलकर मेरठ, हापुड़, अलीगढ़ होते हुए कुल कन्नौज में गंगा से मिलती है। यानी उद्गम से समागम तक रास्ते में नौ जिले काली से कभी उपकृत होते रहे हैं, जहां आज भी उसके प्रभावी निशान हैं। नदी को नवजीवन मिलने के बाद इसमें सालभर पानी रहे और औद्योगिक कचरे व सीवर का डंपिंग ग्राउंड न रहे इसकी खातिर प्रत्येक जिले में एक समिति बनाने की योजना पर विचार चल रहा है।

खतौली के गांव अंतवाड़ा में नमामि गंगे के सह संयोजक काली नदी का भ्रमण करते हुए • सौ- सह संयोजक

कैसे हो नदी संसद का गठन

नदी संसद के लिए पहले जिलास्तरीय टीम का गठन होगा। इसमें नदी सफाई, नदी बचाओ, जल संरक्षण पर काम करने वाले लोगों को सक्रिय सदस्य के तौर पर चुना जाए। इसके साथ ही समाज के कुछ और प्रतिष्ठित लोगों को इस समिति का हिस्सा बनाया जाए। इस तरह प्रत्येक जिले में 20-21 लोगों की एक टीम हो जाएगी। नदी संसद के मॉडल में हर जिले में संयोजक और सह संयोजक भी होंगे। नदी संसद के लिए जिला स्तरीय टीम में सक्रिय सदस्य के तौर पर शामिल किए जाने के साथ ही समय-समय पर किए जाने वाले अधिवेशन में जलाधिकारी से लेकर नदी विकास से जुड़े सरकारी महकमों के अफसरों को भी आमंत्रित किए जाने का प्रस्ताव सामने आया है। काली के उद्धार में जुटे नदी पुत्र रमन त्यागी कहते हैं जिला स्तरीय समिति के गठन की प्रक्रिया शुरू भी कर दी गई है।

अधिवेशन में तय किए जाएं निर्णय

जिला स्तरीय समिति को लेकर नदी संसद का गठन होगा और हर जिले के संयोजक और सह-संयोजक को लेकर कैबिनेट की तर्ज पर निर्णय लेने वाली संस्था का गठन किया जाएगा। अधिवेशन में हर जिले के प्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्र में नदी की स्थिति और समस्याओं के निराकरण की दिशा में किए गए प्रयासों पर चर्चा करेंगे। जहां कोई दिक्कत होगी, उसके समाधान का मार्ग भी ढूंढा जाएगा।

भूजल सेना की हो सकती है महती भूमिका

प्रदेश सरकार ने आम जनता को जल संचय के प्रति जागरूक करने और जल संरक्षण को बढ़ावा देने के मकसद से हर जिले में भूजल सेना का गठन किया हुआ है। नदी संसद को संचालित करने और इसे सफल बनाने में भूजल सेना जैसी संस्थाओं का भी अहम रोल हो सकता है। ये पहले से ही इस दिशा में काम कर रहे हैं, लिहाजा इनका साथ काली नदी को पुनर्जीवित करने की कोशिश को मुकाम तक पहुंचा सकता है।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम को पुनर्जीवित करने के संबंध में आयोजित बैठक में मौजूद ग्रामीण • जागरण

युवाओं की टोली मिटाएगी कलंक

नमामि गंगे के सहसंयोजक ने काली के उद्गम स्थल को देखा

जासं, खतौली : अंतवाड़ा गांव के युवा रविवार, एक दिसंबर को एक साथ मिलकर काली के कलंक को मिटाने के लिए श्रमदान करेंगे। अंतवाड़ा में जहां काली में अब भी जलकुंभियों और गंदगी-गाद की वजह से बहाव नहीं हो पा रहा है, युवा उस समस्या का मूल नाश करने नदी में उतरेंगे। रविवार को गांव अंतवाड़ा में युवा ग्राम विकास समिति के साथ नीर फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं की बैठक में यह निर्णय लिया गया। नागिन नदी (काली नदी के उद्गम स्थल पर इसे इसी नाम से पहचाना जाता है) के नाम से प्रसिद्ध काली नदी के सुधार को लेकर युवाओं के साथ बैठक में चर्चा की गई। बैठक में ग्रामीणों से नदी के सुधार के लिए आगे आने की अपील की गई। उधर नमामि गंगे के सहसंयोजक ने नदी के उद्गम स्थल देखा। उन्होंने उद्गम स्थल पर जलधारा फूटने पर हर्ष जताया।

भूमिया मंदिर में हुई बैठक में नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने कहा कि खतौली क्षेत्र के लिए गौरव की बात है कि अंतवाड़ा से काली नदी का उद्गम हुआ। इसके पुनर्जीवित करने के लिए जो कदम उठाया गया है, उसमें सभी ग्रामीणों के सहयोग की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सभी नदियों का उद्गम पहाड़ों से हुआ, पर काली नदी का उद्गम यहां से हुआ। यहां की धरती में दैव्य शक्ति है। इस नदी को पुराने स्वरूप में लाने के लिए ग्रामीणों को भी आगे आना होगा। ग्रामीणों ने नदी के सुधार के लिए हर तरह का सहयोग देने का भरोसा दिलाया। बैठक में जागृति मंच के संयोजक परमेंद्र सागर, अधिवक्ता राजबीर सिंह आदि ने विचार रखे। बैठक में इंदरजीत, मुकेश, राजपाल, जयकरण, रोबिन, महाराज सिंह व नरेश कुमार आदि मौजूद रहे।

इससे पूर्व नमामि गंगे के सह संयोजक डॉ. बीर पाल निर्वाल अपनी टीम के साथ नदी उद्गम पर पहुंचे। उन्होंने नदी का अवलोकन किया। उन्होंने पानी को हाथ में लेकर देखा। उन्होंने नदी से जलधारा पुनः निकलने पर हर्ष जताया। कहा कि यह नदी एक बार फिर क्षेत्र के वैभव बढ़ाने में महती भूमिका निभाएगी।

अरवरी नदी संसद को भी जरा जान लीजिए

जासं, मेरठ : अरवरी जल संसद की कहानी एक छोटी-सी गुमनाम सदानीरा नदी के सूखने और उसके फिर से जिंदा होने की कहानी है।

1960 के आसपास सूख चुकी नदी में जब 1990 में पहली बार पानी बहता दिखा। इस घटना से लोगों का भरोसा मजबूत हुआ और उनके हौसलों को नई ताकत मिली। काम और आगे बढ़ा तथा सन 1995 के आते-आते पूरी अरवरी नदी जिंदा हो गई। तब से अब तक वह नदी सदानीरा है। इसे सदानीरा बनाने के लिए अरवरी संसद का गठन किया गया।

1999 में आयी नदी संसद

26 जनवरी 1999, मंगलवार को सवेरे 11 बजे गांधीवादी नेता सिद्धराज ढड्ढा की अध्यक्षता में हमीरपुर गांव में संकल्प ग्रहण समारोह आयोजित हुआ और 70 गांवों की अरवरी संसद अस्तित्व में आई। नदी संसद के मुख्य दायित्वों में प्राकृतिक संसाधनों का संवर्धन करना, समाज की सहजता को तोड़े बिना अन्याय का प्रतिकार करना और समाज में स्वाभिमान, अनुशासन, निर्भयता, रचनात्मकता तथा दायित्वपूर्ण व्यवहार के संस्कारों को मजबूत करना है।

राजस्थान के अलवर में प्रवाहित अरवरी नदी • फाइल फोटो

असर भी दिखा

अरवरी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में प्राकृतिक संरक्षण की बहुत अच्छी एवं जीवंत परंपराएं यथा धराड़ी, बाई, देवबनी, देवअरण्य, गोचर तथा मछली और चीटियों की सुरक्षा है। अरवरी संसद ने इन परंपराओं के अनुसार प्रकृति संरक्षण परंपराओं का पता लगाकर प्रकृति के हित में उन्हें पुनर्जीवित करने का फैसला लिया। सांसदों ने जलस्रोतों के उचित प्रबंध में संसद और ग्रामसभा की भूमिका तथा उसके उत्तरदायित्वों के निर्धारण के लिए स्थायी व्यवस्था कायम की ताकि देखभाल की कमी से गांवों की साझा प्राकृतिक संपदा बर्बाद नहीं हो। इसके लिए उन्होंने पूरी जागरूकता और समझदारी से विकेन्द्रित, टिकाऊ और स्वावलंबी व्यवस्था कायम की। इसके लिए नियम और कायदे बनाए हैं और उन्हें पूरी तरह लागू किया है।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम को पुनर्जीवित करने के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित करते नीर फाउंडेशन के निदेशक रमन कांत त्यागी • जागरण

संत की भविष्यवाणी की बाट जोहती काली

रवि प्रकाश तिवारी, मेरठ

गंगा की सहायक नदी काली जो मुजफ्फरनगर के अंतवाड़ा गांव से निकलकर कन्नौज पहुंचकर गंगा में समा जाती है, उसे नवजीवन देने की कोशिश रंग लाने लगी है। इसी नदी को लेकर परमहंस अद्वैत मठ के स्वामी स्वरूपानंद ने 1934 में अपने अनुयायियों से कहा था कि एक दिन आएगा, जब काली (स्थानीय स्तर पर इसे नागिन कहते हैं) के घाट बनेंगे और वह गुरु घाट कहलाएंगे। स्वामीजी की इस भविष्यवाणी के बाद काली के दिन बहुरने का इंतजार होने लगा। इसी बीच नदी पुत्र रमन त्यागी के साथ मिलकर दैनिक जागरण ने 'काली बुला रही है' के तहत काली को प्रदूषणमुक्त करने का अभियान छेड़ा, जिससे अब एक उम्मीद जगी है।

समाधीलीन होने से पूर्व स्वामी स्वरूपानंद महाराज ने बताया था काली का बनेगा घाट

वर्तमान स्थिति में नंगली में एक ओर सूखी तो दूसरी ओर गंदगी से अटी पड़ी है काली

मुजफ्फरनगर के अंतवाड़ा गांव में आठ फीट की खोदाई में ही फूट पड़ी जलधारा। यही काली नदी का उद्गम स्थल भी है • जागरण

85 वर्ष
स्वामी स्वरूपानंद ने कहा था काली किनारे बनेगा गुरु घाट

103 इकाईयां
चार जिलों की औद्योगिक इकाईयों का कचरा काली में गिरता है

2114 क्यूसेक
मेरठ के छह नालों की गंदगी सीधे काली नदी में गिरती है

7.28 करोड़
मेरठ में काली नदी का गाद निकालने का बना है एस्टीमेट

105 क्यूसेक
काली नदी में साफ पानी गंगनहर से छोड़ने की है योजना

काली नदी के उद्गम स्थल पर खोदाई के दौरान पुनः जलधारा फूटने के बाद से नंगली तीर्थ का संत समाज भी आशावान है। दरअसल, यहां के लोगों के बीच नंगली निवासी भगवान जी कहे जाने वाले स्वामी स्वरूपानंद के कथनों पर आधारित धार्मिक पुस्तक श्री स्वरूप दर्शन में भी पृष्ठ 394 पर काली का जिक्र है। उन्होंने 85 वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी कि एक दिन नंगली में काली के किनारे घाट बनेगा। अब जब काली का जलस्रोत एक बार फिर फूट पड़ा है, ऐसे में नंगली तीर्थ में भी खासी हलचल है। श्री नंगली साहिब गुरु मंदिर ट्रस्ट समाधि के सचिव ब्रह्म धरमानंद कहते हैं कि हमारे आराध्य ने सालों पहले जो कहा, वह अब फलीभूत हो रहा है। हमारे ट्रस्ट के सेवादारों ने पूर्व में प्रयास तो किए लेकिन ऐसा लगता है कि उसके पूरा होने का समय अब आया है।

नंगली तीर्थ से लगभग 500 मीटर की दूरी पर काली नदी की दुर्दशा देखी जा सकती है •

हालांकि संत की भविष्यवाणी की बाट जोहती काली के लिए अब भी चुनौतियां कम नहीं हैं। भले ही काली को नवधार मिली है लेकिन उसकी अकाल मृत्यु के कारक आज भी जिंदा हैं। ...और विकराल होते जा रहे हैं। ऐसे में समाज और व्यवस्था दोनों के लिए यह चुनौती है कि काली की धार सुखाने वाले कारखानों और गंदे नालों से बचाएं और इसे इसका मूल स्वरूप लौटाएं, ताकि आज उजड़ रही सभ्यता-संस्कृति एक बार फिर काली के किनारे लहलहाए।

काली के लिए ये बड़ी चुनौतियां हैं

काली नदी का जल स्रोत बंद होने के बाद यह नदी दशकों पहले मरणासन्न अवस्था में चली गई। इसमें अब गांव से निकलने वाला पानी बहता है या फिर औद्योगिक कचरा या शहरों का सीवर। नौ जिलों से होकर कन्नौज तक 598 किमी की यात्रा करने वाली यह नदी नागिन, काली और कालिंदी तीन नाम से पहचानी जाती है। इनमें सबसे अधिक गंदगी काली को मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर और अलीगढ़ की ढोनी पड़ती है। यहां की 103 औद्योगिक इकाईयां प्रदूषित जल सीधे इसमें डाल रही हैं। कोढ़ में खाज सीवर करता है। अकेले मेरठ की बात करें तो यहां के छह नालों से लगभग 2114 क्यूसेक गंदगी सीधे काली की गोद में गिरती है जिसकी वजह से किनारे बसे गांव के लोगों में कैंसर तक की बीमारियां हुईं और अब पीढ़ियों के बर्बाद होने के डर से वे पुराने घर छोड़कर खेतों में घर बनाकर रहने लगे हैं।

नंगली तीर्थ स्थल में मंदिर का मुख्यद्वार • जागरण

नंगली तीर्थ का महात्म्य भी जान लीजिए

नंगली तीर्थ मेरठ के नंगली गांव में स्थित है, इसे पवित्र तीर्थ माना जाता है। नंगली तीर्थ स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज की समाधि के कारण से लोकप्रिय है। मुख्य सड़क से तीर्थ तक पहुंचने के लिए रास्ते में 84 मोड़ आते हैं। मान्यताओं के अनुसार ये 'चौरासी लाख योनियों' के मुक्ति के प्रतीक हैं। वैसे तो नंगली तीर्थ में हर महीने की पूर्णिमा को मेला-सा माहौल रहता है लेकिन स्वरूपानंद जी के निर्वाण दिवस के दिन देश-विदेश से करीब 60-70 हजार की संख्या में लोग पहुंचते हैं। यह हर वर्ष वैशाख की बदी दूज यानि पूर्णिमा के दूसरे दिन होती है। इसके अलावा जन्मोत्सव जो कि बसंत पंचमी को है और गुरु पूर्णिमा के दिन भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु वहां पहुंचते हैं। बता दें कि स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज का जन्म एक फरवरी, 1884 को हुआ था और वे 5 जुलाई, 1936 को समाधिलीन हुए थे।

ये है बड़ी चिंता

- काली नदी ईस्ट में 103 बड़ी औद्योगिक इकाइयों का वेस्टेज गिरता है।
- काली नदी में बीओडी की मात्रा 369 मिली प्रति लीटर तक मिली है, जो खेलगांव के पास 502 मिलीग्राम तक दर्ज हुई। ये मानक दो मिलीग्राम प्रति लीटर से सैकड़ों गुना है।
- नदी में पहुंचने वाले सड़े गले पदार्थ, कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायन और उर्वरक मिलकर पानी का आक्सीजन खत्म करते हैं।
- टैक्सटाइल, बैट्री कारोबार, पेपर मिल, शुगर, डिस्टिलरीज, गैराज व चर्मशोधन इकाइयों से बड़ी मात्रा में भारी तत्व पानी में पहुंच गए हैं।

हो रहा काम, और तेजी की जरूरत : रम

नदी पुत्र रमन त्यागी बताते हैं कि सिंचाई विभाग ने काली में बहाव बनाए रखने के लिए अकेले मेरठ में काली की गाद निकालने और सफाई के लिए 7.28 करोड़ रुपये का प्रोजेक्ट बनाया है। इसके साथ ही गंगनहर से 105 क्यूसेक पानी इस नदी में छोड़ने की योजना बनाई है। इस प्रोजेक्ट को कागजों से अब जमीन पर उतारने की जरूरत है। साथ ही नालों और औद्योगिक कचरे के लिए एसटीपी की व्यवस्था हर हाल में करनी ही होगी। इस दिशा में काम चल भी रहा है, बस उसमें तेजी लानी होगी।

रिश्तेदारों को अब दिखाएंगे, कहां से निकलती है काली

जागरण संवाददाता, मेरठः गांव जो एक नदी का उद्गम स

हो, गौरव से उसका सीना फूलना आम बात है। लेकिन अगर उसी गांव में उस नदी का नामोनिशां मिट जाए तो यह दिल को भी खूब तकलीफ देती है। अंतव के ग्रामीणों को सालों से अंदर अंदर यह दुख था कि जिससे उ पहचान है, अब वही नहीं है। लेकि नवंबर माह के तीसरे सप्ताह में हुआ, अंतवाड़ा के लिए इतिहास गया। एक बार फिर गांव के लोग के उद्गम स्थल होने का गौरव हासि कर चुके हैं। तमाम युवाओं, अ और बच्चों के बीच एक बुजुर्ग चमकती आंखें बता रही थी उनकी सालों की हसरत पूरी हो गई

गांव के सबसे बुजुर्ग 93 व सुनहरा लाठी के सहारे नदी के तक पहुंचे। बातचीत में उन्होंने बत कि रिश्तेदार आते थे तो काली दिखाने को कहते थे। यहां सबकु खत्म हो गया था, हम शर्मिंदा महसू करते थे। लेकिन अब उन्हें दिखाएंगे। अपने किशोरावस्था दिनों को याद करते हुए वे कहते कि मुझे खूब याद है कि हम चारे लिए नदी पार कर खेतों में जाया क थे। नदी में पानी काफी समय तक लेकिन बाद में सबकुछ पट गया अब पानी निकलता देखकर अ लग रहा है। फिर से उभर आर्थ हमारी काली नदी।

संत की भविष्यवाणी की बाट जोहती काली

- समाधीलीन होने से पूर्व स्वामी स्वरूपानंद महाराज ने बताया था काली का बनेगा घाट
- वर्तमान स्थिति में नंगली में एक ओर सूखी तो दूसरी ओर गंदगी से अटी पड़ी है काली

मुजफ्फरनगर के अंतवाड़ा गांव में आठ फीट की खोदाई में ही फूट पड़ी जलधारा। यही काली नदी का उद्गम स्थल भी है • जागरण

रवि प्रकाश तिवारी, मेरठ

गंगा की सहायक नदी काली जो मुजफ्फरनगर के अंतवाड़ा गांव से निकलकर कन्नौज पहुंचकर गंगा में समा जाती है, उसे नवजीवन देने की कोशिश रंग लाने लगी है। इसी नदी को लेकर परमहंस अद्वैत मठ के स्वामी स्वरूपानंद ने 1934 में अपने अनुयायियों से कहा था कि एक दिन आएगा, जब काली (स्थानीय स्तर पर इसे नागिन कहते हैं) के घाट बनेंगे और वह गुरु घाट कहलाएंगे। स्वामीजी की इस भविष्यवाणी के बाद काली के दिन बहुरने का इंतजार होने लगा। इसी बीच नदी पुत्र रमन त्यागी के साथ मिलकर दैनिक जागरण ने 'काली बुला रही है' के तहत काली को प्रदूषणमुक्त करने का अभियान छेड़ा, जिससे अब एक उम्मीद जगी है।

85 वर्ष	**103** इकाईयां	**2114** क्यूसेक	**7.28** करोड़	**105** क्यूसेक
स्वामी स्वरूपानंद ने कहा था काली किनारे बनेगा गुरु घाट	चार जिलों की औद्योगिक इकाईयों का कचरा काली में गिरता है	मेरठ के छह नालों की गंदगी सीधे काली नदी में गिरती है	मेरठ में काली नदी का गाद निकालने का बना है एस्टीमेट	काली नदी में साफ पानी गंगनहर से छोड़ने की है योजना

काली नदी के उद्गम स्थल पर खोदाई के दौरान पुनः जलधारा फूटने के बाद से नंगली तीर्थ का संत समाज भी आशावान है। दरअसल, यहां के लोगों के बीच नंगली निवासी भगवान जी कहे जाने वाले स्वामी स्वरूपानंद के कथनों पर आधारित धार्मिक पुस्तक श्री स्वरूप दर्शन में भी पृष्ठ 394 पर काली का जिक्र है। उन्होंने 85 वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी कि एक दिन नंगली में काली के किनारे घाट बनेगा। अब जब काली का जलस्रोत एक बार फिर फूट पड़ा है, ऐसे में नंगली तीर्थ में भी खासी हलचल है। श्री नंगली साहिब गुरु मंदिर ट्रस्ट समाधि के सचिव ब्रह्म धरमानंद कहते हैं कि हमारे आराध्य ने सालों पहले जो कहा, वह अब फलीभूत हो रहा है। हमारे ट्रस्ट के सेवादारों ने पूर्व में प्रयास तो किए लेकिन ऐसा लगता है कि उसके पूरा होने का समय अब आया है।

हालांकि संत की भविष्यवाणी की बाट जोहती काली के लिए अब भी चुनौतियां कम नहीं हैं। भले ही काली को नवधार मिली है लेकिन उसकी अकाल मृत्यु के कारक आज भी जिंदा हैं। ...और विकराल होते जा रहे हैं। ऐसे में समाज और व्यवस्था दोनों के लिए यह चुनौती है कि काली की धार सुखाने वाले कारखानों और गंदे नालों से बचाएं और इसे इसका मूल स्वरूप लौटाएं ताकि आज उजड़ रही सभ्यता-संस्कृति एक बार फिर काली के किनारे लहलहाए।

नंगली तीर्थ से लगभग 500 मीटर की दूरी पर काली नदी की दुर्दशा देखी जा सकती है •

काली के लिए ये बड़ी चुनौतियां हैं

काली नदी का जल स्रोत बंद होने के बाद यह नदी दशकों पहले मरणासन्न अवस्था में चली गई। इसमें अब गांव से निकलने वाला पानी बहता है या फिर औद्योगिक कचरा या शहरों का सीवर। नौ जिलों से होकर कन्नौज तक 598 किमी की यात्रा करने वाली यह नदी नागिन, काली और कालिंदी तीन नाम से पहचानी जाती है। इनमें सबसे अधिक गंदगी काली को मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर और अलीगढ़ की झेलनी पड़ती है। यहां की 103 औद्योगिक इकाईयां प्रदूषित जल सीधे इसमें डाल रही हैं। कोढ़ में खाज सीवर करता है। अकेले मेरठ की बात करें तो यहां के छह नालों से लगभग 2114 क्यूसेक गंदगी सीधे काली की गोद में गिरती है जिसकी वजह से किनारे बसे गांव के लोगों में कैंसर तक की बीमारियां हुईं और अब पीढ़ियों के बर्बाद होने के डर से वे पुराने घर छोड़कर खेतों में घर बनाकर रहने लगे हैं।

नंगली तीर्थ स्थल में मंदिर का मुख्यद्वार • जागरण

नंगली तीर्थ का महात्म्य भी जान लीजिए

नंगली तीर्थ मेरठ के नंगली गांव में स्थित है, इसे पवित्र तीर्थ माना जाता है। नंगली तीर्थ स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज की समाधि के कारण से लोकप्रिय है। मुख्य सड़क से तीर्थ तक पहुंचने के लिए रास्ते में 84 मोड़ आते हैं। मान्यताओं के अनुसार ये 'चौरासी लाख योनियों' के मुक्ति के प्रतीक हैं। वैसे तो नंगली तीर्थ में हर महीने की पूर्णिमा को मेला-सा माहौल रहता है लेकिन स्वरूपानंद जी के निर्वाण दिवस के दिन देश-विदेश से करीब 60-70 हजार की संख्या में लोग पहुंचते हैं। यह हर वर्ष वैशाख की बदी दूज यानि पूर्णिमा के दूसरे दिन होती है। इसके अलावा जन्मोत्सव जो कि बसंत पंचमी को है और गुरु पूर्णिमा के दिन भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु वहां पहुंचते हैं। बता दें कि स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज का जन्म एक फरवरी, 1884 को हुआ था और वे 5 जुलाई, 1936 को समाधिलीन हुए थे।

ये है बड़ी चिंता

- काली नदी ईस्ट में 103 बड़ी औद्योगिक इकाइयों का वेस्टेज गिरता है।
- काली नदी में बीओडी की मात्रा 369 मिली प्रति लीटर तक मिली है, जो कोलगाव के पास 502 मिलीग्राम तक दर्ज हुई। ये मानक दो मिलीग्राम प्रति लीटर से सैकड़ों गुना है।
- नदी में पहुंचने वाले सड़े गले पदार्थ, कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायन और उर्वरक मिलकर पानी का आक्सीजन खत्म करते हैं।
- टैक्सटाइल, पैट्री कारोबार, पेपर मिल, शुगर, डिस्टिलरीज, गैराज व चर्मशोधन इकाइयों से बड़ी मात्रा में भारी तत्व पानी में पहुंच गए हैं।

हो रहा काम, और तेजी की जरूरत : रमन

नदी पुत्र रमन त्यागी बताते हैं कि सिंचाई विभाग ने काली में बहाव बनाए रखने के लिए अकेले मेरठ में काली की गाद निकालने और सफाई के लिए 7.28 करोड़ रुपये का प्रोजेक्ट बनाया है। इसके साथ ही गंगनहर से 105 क्यूसेक पानी इस नदी में छोड़ने की योजना बनाई है। इस प्रोजेक्ट को कागजों से अब जमीन पर उतारने की जरूरत है। साथ ही नालों और औद्योगिक कचरे के लिए एसटीपी की व्यवस्था हर हाल में करनी ही होगी। इस दिशा में काम चल भी रहा है, बस उसमें तेजी लानी होगी।

रिश्तेदारों को अब दिखाएंगे, कहां से निकलती है काली

जागरण संवाददाता, मेरठः
गांव जो एक नदी का उद्गम स
हो, गौरव से उसका सीना फूलना आम बात है। लेकिन अगर उसी गांव में उस नदी का नामोनिशां मिट जाए तो वह दिल को

भी खूब तकलीफ देती है। अंतव
के ग्रामीणों को सालों से अंदर
अंदर यह दुख था कि जिससे उ
पहचान है, अब वही नहीं है। लेि
नवंबर माह के तीसरे सप्ताह में
हुआ, अंतवाड़ा के लिए इतिहास
गया। एक बार फिर गांव के लोग
के उद्गम स्थल होने का गौरव हाि
कर चुके हैं। तमाम युवाओं, अ
और बच्चों के बीच एक बुजुर्ग
चमकती आंखें बता रही थी
उनकी सालों की हसरत पूरी हो गई
गांव के सबसे बुजुर्ग 93 व
सुनहरा लाठी के सहारे नदी के
तक पहुंचे। बातचीत में उन्होंने बत
कि रिश्तेदार आते थे तो काली
दिखाने को कहते थे। यहां सबकु
खत्म हो गया था, हम शर्मिंदा मह
करते थे। लेकिन अब उन्हें
दिखाएंगे। अपने किशोरावस्था
दिनों को याद करते हुए वे कहत
कि मुझे खूब याद है कि हम चार
लिए नदी पार कर खेतों में जाया क
थे। नदी में पानी काफी समय तक
लेकिन बाद में सबकुछ पट गया
अब पानी निकलता देखकर अ
लग रहा है। फिर से उभर आर्ग
हमारी काली नदी।

नदी थी काली, इतराते थे गोरे भी

अंग्रेजों ने 1910 से 1920 के बीच जारी किया था काली नदी का पोस्टकार्ड

रवि प्रकाश तिवारी • मेरठ

काली नदी की कल-कल धार और रमणीक किनारे कभी अंग्रेजों को भी मुग्ध करते थे। काली के प्रति उनका आकर्षण तो इतिहास में भी दर्ज हो चुका है। काली की खूबसूरती से प्रभावित होकर गोरों ने 20वीं शताब्दी के दूसरे दशक में पोस्टकार्ड तक जारी किया था।

आज की पीढ़ी के लिए यह तथ्य किसी किस्सागोई से ज्यादा नहीं होगा, लेकिन इतिहास के पन्नों को पलटें तो यह रोमांचकारी जानकारियां और तस्वीरें आज हमें चमत्कृत कर देंगी। तब कैमरों का इस्तेमाल बेहद सीमित था। मेरठ छावनी में तैनात अंग्रेज अफसरों ने डाक टिकट के लिए मेरठ से एक स्केच इंग्लैंड भेजा था जो जर्मनी में जारी हुआ था।

काली नदी पर अंग्रेजों द्वारा जारी किया गया पोस्टकार्ड • सौ. डा. अमित पाठक

मेरठ में प्रथम स्वाधीनता संग्राम से संभलने के बाद अंग्रेजों ने मेरठ के रमणीय स्थलों की तस्वीरें एकत्रित करनी शुरू की। कैंट से बाहर शहर के कुछ महत्वपूर्ण इलाके, गंगनहर और काली नदी की भी तस्वीर ली गई। ब्रितानी हुकूमत ने इन तस्वीरों पर पोस्टकार्ड जारी करने का प्लान बनाया और 1910 से 1922 के बीच पोस्टकार्ड जर्मनी में प्रकाशित भी किया गया। इन पोस्टकार्डों में से काली नदी का जो पोस्टकार्ड जारी किया गया, वह मेरठ के हिस्से में बहने वाली काली नदी का है। पोस्टकार्ड की इस तस्वीर में काली नदी के दोनों किनारे बेहद साफ-सुथरे और हरे-भरे नजर आते हैं, जबकि आज की काली की तस्वीर बिल्कुल उलट है।

काली प्रमाण है, हमने बहुत कुछ खोया है

काली नदी के शानदार दिनों की तस्वीर पर बने इस पोस्टकार्ड को खरीदने वाले सेंटर फॉर आर्म्ड फोर्सेज हिस्टोरिकल रिसर्च, नई दिल्ली के फेलो डा. अमित पाठक कहते हैं कि अगर ब्रितानी हुकूमत के समय जारी किए गए पोस्टकार्डों की श्रृंखला पर नजर डालें तो सब के सब बेहद अहम, खूबसूरत और आकर्षक हैं। ऐसे में काली नदी का इसमें शामिल होना प्रमाण है कि नदी और इसके आसपास के किनारे कितने खूबसूरत रहे होंगे। लेकिन जिस नदी ने सदियों तक सभ्यता को संवारा उसे कुछ देने की बजाए हम उसके अस्तित्व को ही लगभग खत्म कर चुके हैं। कहने में कोई गुरेज नहीं कि काली की यह दशा हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक पतन का एक उदाहरण है।

मेरठ के गेसूपुर के पास की यह तस्वीर काली नदी की बदहाली को बयां करने के लिए काफी है • जागरण

आज तो काल बन गई है काली

नदी जीवनदायिनी होती है। लेकिन अगर उसके जीवन को ही खत्म कर दिया जाए तो कैसे जीवनदायिनी काल बन जाती है, इसका प्रमाण काली है। जनश्रुतियों के अनुसार काली के पानी में इतना गुण होता था कि काली खांसी तक ठीक हो जाती थी। लेकिन आज इस नदी के किनारे पर बसे गांव के लोग अपने मूल निवास को छोड़ दूसरी जगह बसने लगे हैं। काली के निकट खड़ा होना भी आज चुनौती से कम नहीं। सिंचाई विभाग की रिपोर्ट में भी माना गया है कि काली इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि इसकी वजह से कैंसर, पीलिया, टीबी जैसे रोग हो रहे हैं।

गंगा की सहायक है काली

काली नदी आज भले ही कई गांवों के लिए कैंसर का कारक बन गई या बना दी गई है लेकिन यह गंगा की सहायक नदी के रूप में जानी जाती रही है। लगभग 598 किमी लम्बी काली नदी (पूर्व) मुजफ्फरनगर के खतौली के अंतवाड़ा गांव से प्रारंभ होकर मेरठ, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा व फर्रुखाबाद के बीच से होते हुए में कन्नौज में जाकर गंगा में मिल जाती है। अपने उद्गम स्रोत से मेरठ तक इसकी हालत नाले से भी बदतर है। इस नदी के किनारे लगभग 1200 गांव, कस्बे और शहर बसे हुए हैं। आज की तस्वीर देखकर हम यह कह सकते हैं कि इन सभी आबादी का कचरा आज यही नदी ढोती है।

शुरुआत की है तो अंजाम तक पहुंचाएंगे

मैं इस अभियान में पहले दिन से जुड़ा हूं। जिस दिन पहला फावड़ा चला था, हमें कतई उम्मीद नहीं थी कि इतनी बड़ी उपलब्धि के हम गवाह बनेंगे। एक नदी की जलधारा फूटते देखना मेरे लिए जीवन की सबसे बड़ी घटना है। हमने इस अभियान को शुरू किया है, सभी के साथ मिलकर इसे न सिर्फ आगे बढ़ाएंगे, बल्कि अंजाम तक पहुंचाएंगे।

मस्तराम नागर

अब युवा भी लगाएंगे जोर

जिस गांव में काली नदी का उद्गम स्थल है, उस अंतवाड़ा में युवाओं के हितों को साधने और उन्हें सही मार्गदर्शन के मकसद से युवा क्रांति समिति का गठन पहले से ही है। नौकरी के लिए तैयारियों को लेकर टिप्स देने की बात हो या फिर जरूरतमंद युवा की काउंसलिंग या फिर आवश्यक सलाह देने की जरूरत, समिति के सदस्य अपनी महती भूमिका निभाते हैं। अब चूंकि उनके गांव में काली नदी की फिर से धारा फूटी है लिहाजा गांव के युवा भी इस नदी को नवजीवन देने में कारसेवा के लिए योजनाबद्ध तरीके से जुटेंगे। समिति के सदस्य सचिन कुमार का कहना है कि यह हमारे गांव के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। गांव को जो गौरव मिला है, उसे संवारने और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी तो हम युवाओं पर ही है।

मुजफ्फरनगर में खतौली के अंतवाड़ा गांव में काली नदी के उद्गमस्थल पर पौधारोपण करते ग्रामीण • जागरण

काली की जिम्मेदारी उठाने को आगे आए अंतवाड़ा के ग्रामीण

काली नदी के उद्गमस्थल से पानी निकलने के बाद से काली को पुनर्जीवित करने के लिए ग्रामीण भी अभियान से जुड़ने लगे हैं। शुक्रवार को भी ग्रामीण मौके पर पहुंचे और उन्होंने काली को जिंदा रखने की हर मुहिम का हमराही बनने की बात कही। इस मौके पर ग्रामीणों ने वृक्षारोपण भी किया। इसमें डा. महावीर सिंह, डा. सुनील कुमार, सचिन कुमार, रविंद्र कुमार, जितेंद्र कुमार, मुकेश कुमार, नरेंद्र सिंह, वीरेंद्र सिंह, मस्तराम नागर, जाहिद अली, राजकुमार सहित कई लोग शामिल हुए।

रविवार को होगी बैठक

अंतवाड़ा गांव की जनसंख्या लगभग छह हजार के आसपास है जबकि मुजफ्फरनगर के और भी आठ गांव इस नदी के किनारे बसते हैं। नदी को पुनर्जीवित करने की जिम्मेदारी ग्रामीण किस तरह उठाएं और उसके लिए क्या-क्या वे कर सकते हैं, इन तमाम विषयों पर मंथन और आम राय बनाने की खातिर बैठकों का दौर रविवार से शुरू होने जा रहा है। रविवार को पहली बैठक अंतवाड़ा गांव में ही होगी।

बेफिक्र रहें, काली के लिए नहीं टूटेगा किसी का घर

नदी के उद्धार को कुछ लोग भ्रम की स्थिति भी पैदा कर रहे हैं। कुछ लोगों द्वारा यह बात फैलाने की कोशिश हो रही है कि आने वाले दिनों में काली के किनारे के कुछ मकान भी उजड़ सकते हैं। इस तरह की अफवाहों पर नदी उद्धार में सक्रिय भूमिका निभा रहे नदी पुत्र रमन त्यागी ने गुरुवार को ग्रामीणों से बातचीत के क्रम में स्पष्ट किया कि अफसरों ने साफ-साफ वायदा किया है कि काली के लिए किसी का घर नहीं टूटेगा। उन्होंने कहा कि जिस तरफ खाली जमीन है, वहां तो सरोवर खोदा जा रहा है लेकिन जिस छोर पर मकान नजदीक हैं, वहां लोगों से हम यही अपील कर रहे हैं कि वे आसपास की जमीन पर फलदार वृक्ष लगाइए, फल भी आप ही खाइए।

खुदाई के दौरान जमीन से निकल आई जल धारा, पर्यावरणविद् डॉ. अनिल जोशी ने भी किया श्रमदान

प्रयास : लोगों ने श्रमदान कर की काली नदी की सफाई

बदली सूरत

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

मेरठ-मुजफ्फरनगर जिलों की सीमा पर अंतवाड़ा गांव में गुरुवार को किसानों, सामाजिक संगठनों के लोगों और पर्यावरणविदों ने श्रमदान किया तो काली नदी उद्गम स्थल पर पानी दिखा। श्रमदान और खुदाई के दौरान पानी दिखने से लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। नदी उद्गम से नदी फिलहाल बहने लगी। इसके साथ ही किसान और आसपास के गांवों के लोग खुशी से झूम उठे।

नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने बताया कि वह हिंडन, काली पूर्वी, काली पश्चिमी, कृष्णा पांवधोई, नागदेई नदियों को पुनर्जीवित करने का कार्य कर रहे हैं। अखिल भारतीय पर्यावरणीय सह संयोजक और पर्यावरणविद डॉ. अनिल जोशी ने बताया कि गंगा की प्रमुख सहायक काली नदी जो कई दशकों से बंद पड़ी है, उसकी खुदाई का कार्य शुरू किया हुआ है। यह नदी अंतवाड़ा गांव से शुरू होकर मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, कासगंज, फर्रुखाबाद से होते हुए कन्नौज में जाकर करीब 498 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद गंगा में समाहित हो जाती है।

लुप्तप्राय: हो चुकी इस नदी कि किनारे करीब 1200 गांव बसे हुए हैं। नदी पर जिन लोगों ने अतिक्रमण कर लिया था, जिसे प्रशासन, संगठन के सहयोग से अतिक्रमण मुक्त कराया गया।

अंतवाड़ा गांव में गुरुवार को काली नदी की सफाई को श्रमदान करते लोग। • हिन्दुस्तान

किसानों ने 145 बीघा जमीन को खाली कर दिया। हैवको व एनएसएसटीजी के सहयोग से नदी को पुर्नजीवन देने की कवायद शुरू की। नदी को जीवित करने के लिए विभिन्न संगठनों के साथ ही भारतीय किसान यूनियन, पर्यावरणविद, प्रशासन भी जुटा। गुरुवार को नीर फाउंडेशन के निदेशक रमन कांत त्यागी ने जानकारी देते हुए बताया कि नदी को पुनर्जीवित करने के लिए कई संगठनों का सहयोग मिला है।

अंतवाड़ा पहुंचकर काली नदी के उद्गम स्थल पर श्रमदान में आज पर्यावरणविद डॉ. अनिल जोशी, पथिक सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुखिया गुर्जर, अखिल भारतीय पर्यावरण गतिविधियों की सह संयोजक राकेश जैन ने भी सेवा कार्य किया। नदी के उद्गम स्थल पर खुदाई के लिए कई मशीनें लगाई है। नदी की खुदाई करते समय जमीन से खुद ही जल की धारा निकली है। नदी के कार्य को पूरा करने के लिए क्षेत्र के लोग भी श्रमदान कर रहे हैं। फाउंडेशन के इस कार्य को आसपास क्षेत्र के लोगों ने सराहा तथा श्रमदान में सहयोग किया।

जलाशय और पेड़ देंगे काली को नवजीवन

काली नदी ईस्ट के उद्गम स्थल मुजफ्फरनगर में खतौली के अंतवाड़ा गांव में एक बार फिर जलधारा फूट पड़ी है। लगभग मर चुकी काली नदी को जिंदा होते देख ग्रामीणों और आसपास के क्षेत्र के लोग भी काफी उत्साहित हैं। नदी की धार अविरल रहे और यह नदी अपने छह-सात दशक पुराने स्वरूप में लौटे इसकी खातिर वैज्ञानिक और तकनीकी पक्ष से भी आगे बढ़ा जा रहा है। इसकी खातिर नदी की 145 बीघा जमीन पर ही जलाशय और री-चार्ज पिट भी खोदे जा रहे हैं। 10 हजार से अधिक पौधे रोपन की योजना है। आइए रवि प्रकाश तिवारी की इस रिपोर्ट में समझते हैं आखिर जलाशय और पौधे रोपने के पीछे का विज्ञान क्या है...

अंतवाड़ा गांव में खोदा गया जलाशय • जागरण

12 तालाब
अंतवाड़ा गांव में छह खोद दिए हैं, छह और खोदने हैं

300 पिट
रिचार्ज पिट हर 30 फीट की दूरी पर खोदे जा रहे हैं

1.65 करोड़ लीटर
सालभर में इन तालाबों और पिटों में हो सकेगा जलभंडारण

10000 पेड़
नदी के किनारे अलग-अलग किस्मों के पौधे रोपे जाएंगे

छह जलाशय तैयार हैं छह और खोदेंगे

अंतवाड़ा गांव में नदी के किनारे ही छह जलाशय खोद दिए गए हैं। छह और जलाशय बची हुई जमीन पर खोदे जाएंगे। इन जलाशयों में खेत का पानी और गांव का निकलने वाला पानी जमा होकर भूजल स्तर को मेंटेन रखेगा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम भी जल्द दौरा करने वाली है ताकि गांव के घरों-नालियों से निकलने वाले पानी का शोधन कर नदी में पहुंचाने की व्यवस्था की जाए। इसके साथ ही हर 30 फीट की दूरी पर लगभग 300 रीचार्ज पिट भी खोदे जाने हैं। इनमें से कुछ खोद भी दिए गए हैं। चूंकि इस क्षेत्र में जलस्तर ऊंचाई पर है लिहाजा पांच-छह फीट पर ही मिट्टी में गीलापन मिलने लगा है, जो कि शुभ संकेत है।

नदी को जिंदा रखने में जलाशयों का बड़ा योगदान : पोसवाल

आइआइटी मुंबई से डिग्री लेने के बाद नमामि गंगे परियोजना के तहत जलाशयों को पुनर्जीवित करने की जिम्मेदारी उठा रहे दिनेश पोसवाल कहते हैं कि नदी को जिंदा रखने में जलाशयों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान है। वे बताते हैं, नदी के प्रवाहमान रहने के दो कारक होते हैं। एक तो बारिश के पानी से नदी चलती है। बारिश का पानी सूखने पर नदी सूख जाती है। दूसरा, जहां भूजल स्तर ऊपर होता है और नदी नीचे बहती है। ऐसा होने पर भूजल स्तर का फ्लो नदी की ओर होता है और नदी की धारा चलती रहती है। गंगा को ही ले लीजिए, गंगोत्री से जितना पानी निकलता है, उससे कई गुना पानी हमें हमेशा गंगा में मिलता है। इसकी वजह भूजल स्तर से नदी का कनेक्ट ही है। इसलिए अगर जलाशय या रीचार्ज पिट बनाए जा रहे हैं तो निश्चित तौर पर यहां पानी इकट्ठा होने के बाद नदी की ओर बढ़ेगा और इसका प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। वैसे भी अंतवाड़ा में भूजल स्तर काफी ऊंचा है।

नदियों को बचाने के लिए जल क्रांति जरूरी

आज प्राण वायु खत्म हो रही है। मिट्टी जहरीली हो गई, नदियां सूनी हो गई। नदियां ऐसी हैं, जैसे हमारे शरीर में धमनियां, जो रुक जाएं तो जीवन खत्म हो जाता है। नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन यह केवल उनका काम नहीं। इसके लिए जन क्रांति की जरूरत है। मेरठ, मुजफ्फरनगर क्रांति का गढ़ रहा है। हम यहां से जल क्रांति का बिगुल बजाना चाहते हैं। समाज को नदियों को बचाने के लिए जागृत होना पड़ेगा और सरकार को भी गंभीर होना होगा। नदियों को बचाने के लिए हम राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन चलाने का प्रयास कर रहे हैं। अब समाज को यह दिखाना होगा कि अगली बार वोट हवा, मिट्टी व पानी के लिए मिलेगी।

-पद्मश्री डा. अनिल जोशी, पर्यावरणविद

सघन वृक्षारोपण बारिश कराएंगे

लगभग डेढ़-दो किमी की दूरी में नदी के दोनों किनारों पर सघन वृक्षारोपण की व्यवस्था की जा रही है। वन विभाग के सहयोग से अलग-अलग किस्म के 10 हजार पौधे रोपे जाने की योजना है। इसके पीछे का तर्क है कि सघन वृक्षारोपण होगा तो यह बारिश का बड़ा कारक बनेगा जिससे नदी का प्रवाह भी बना रहेगा। वृक्षारोपण में ब्लॉक प्लांटेशन के तहत अलग-अलग उपवन तैयार करने की योजना है। इनमें फलदार, फूलदार के साथ ही औषधीय पौधों की वाटिका लगायी जाएगी।

साफ-सफाई के बाद काली नदी ईस्ट को अंतवाड़ा गांव नदी को मिली धार • जागरण

एक जलाशय में 13 लाख लीटर पानी

12 जलाशय जो खोदे जा रहे हैं, उन सभी को नदियों का नाम दिया जाएगा। एक जलाशय की क्षमता 13 लाख लीटर प्रतिवर्ष की है। कुछ छोटे भी हैं लिहाजा आकलन के मुताबिक 12 जलाशयों में सालभर में 1.20 करोड़ लीटर जल का भंडारण हो सकेगा जबकि 300 पिटों के जरिए लगभग 45 लाख लीटर जल एकत्रित हो सकता है। एक पिट में लगभग 15 हजार जल भंडारण हो सकता है।

– रमन त्यागी, निदेशक नीर फाउंडेशन

अंतवाड़ा में काली नदी ईस्ट के उद्गम स्थ...

जलधारा क...

जागरण संवाददाता, खतौली : नागिन नदी के नाम से प्रसिद्ध काली नदी की सफाई के लिए गांव अंतवाड़ा में उसके उद्गम स्थल पर गुरुवार को भीड़ उमड़ी। इस मौके पर नदी की पूजा-अर्चना की गई और उसके आसपास पौधे रोपे गए। पर्यावरण गोष्ठी में पर्यावरणविदों ने नदियों को जिंदा करने के लिए समाज से आगे आने का आह्वान किया।

गोष्ठी में पर्यावरणविद् पद्मश्री डा. अनिल जोशी ने कहा कि नदियां एक-एक करके मर रही हैं। हर चीज का विज्ञान है, हमने सभी तरह के विज्ञान पर काम किया। हम चंद्रमा पर जाना चाहते हैं, मंगल पर जाना चाहते हैं, लेकिन प्रकृति के विज्ञान को नहीं समझते। नदियों के मरने का जिम्मेदार समाज ही है। हमने नदियों का भोग किया, पर हमने उसे कुछ नहीं दिया। जरूरत है कि हम पृथ्वी को समझें, प्रकृति को समझें।

हरियाणा के किसान पद्मश्री कंवल सिंह चौहान ने कहा कि

रासायनिक खेती से दूषित हो रह...

पिछले 50 वर्षों में रासायनिक खेती से पर्या... हो रहा है। हम साबुन का बहुत उपयोग कर... जिससे पर्यावरण नुकसान पहुंच रहा है। मैं जब केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में था, तब प्लास्टिक पर बैन लगाने, रासायनिक खाद का विकल्प ढूंढने की बात कही थी। आज सरकार पर्यावरण को बचाने के लिए गंभीर हुई। पॉलिथीन व सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन लगाई गई। हमें रासायनिक खाद का प्रयोग भी रोकना होगा। तभी पर्यावरण बच सकेगा।

पद्मश्री कंवल सिंह चौहान, प्रगतिशील किसान

प्रयोग नहीं करने की अपील भी करेंगी। उम्मीद है कि इससे पर्यावरण को बचाने में मदद मिलेगी। अंतवाड़ा का यह प्रयास बड़ा बदलाव लाएगा।

राकेश कुमार जैन, संघ की पर्यावरण गतिविधियों के राष्ट्रीय सह संयोजक

किसानों ने छोड़ी 145 बीघा जमीन

जिंदा हो रही नदी

खोदाई के दौरान आठ फीट पर ही फूट निकली काली नदी ईस्ट की जलधारा

अंतवाड़ा के ग्रामीण भी जुटे हैं नदी के उद्धार की कारसेवा में

रवि प्रकाश तिवारी • मेरठ

जिस इलाके में मेड़ की लड़ाई में अदालत के चक्कर काटते-काटते पीढ़ियां खत्म हो जाती हैं, वहां के ग्रामीणों ने एक नदी को जिंदा करने की खातिर जोत की 145 बीघा जमीन छोड़ दी है। भले ही जमीन उनकी नहीं थी, लेकिन दशकों से कब्जा उनका ही था। इतना ही नहीं, ग्रामीण नदी को जीवित करने के प्रयास में कारसेवा भी कर रहे हैं। यह कहानी है मुजफ्फरनगर में खतौली तहसील के अंतवाड़ा गांव की। इस गांव में काली ईस्ट नदी का उद्गमस्थल है। कालांतर में पाट दी गई नदी की इन दिनों खोदाई चल रही है। आठ फीट की गहराई पर जलधारा फूटने से गांववालों की खुशी का ठिकाना नहीं है। उन्हें विश्वास है कि उनकी नदी अब कल-कल बहेगी।

दरअसल, जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाने वाले नदी पुत्र रमन त्यागी ने काली नदी की सफाई का काफी प्रयास मेरठ में किया था। तकनीकी पक्ष को समझने के बाद उन्होंने पाया कि जब तक नदी का स्रोत फिर से शुरू नहीं होगा, वह बह नहीं सकती। इसके बाद रमन ने खसरा-खतौनी का अध्ययन कर इस स्थान का पता लगाया। जानकारी हुई कि 145 बीघा जमीन नदी के नाम है जिस पर ग्रामीण कब्जा कर खेती कर रहे हैं। गांव के लोगों ने ही खेतीबाड़ी के लिए नदी में भराव कर उसे पाट दिया था। जब स्रोत ही बंद हो गया तो नदी नाले में तब्दील हो गई। समय के साथ यह औद्योगिक कचरों और सीवेज का डंपिंग केंद्र बन गया। लेकिन तस्वीर बदली जानी थी, लिहाजा शुरू हुआ ग्रामीणों को जागरूक करने और व्यवस्था को जगाने का काम। पिछले दो महीने में नदी की धारा को फिर आकार दिया गया। गाद-गंदगी साफ करने के क्रम इसी मंगलवार को उसी मूल स्थान पर जलधारा फूट निकली जहां कागजों में नदी का उद्गम बताया गया है। इस धारा से जलप्रवाह जारी है।

अंतवाड़ा गांव में खोदाई के दौरान फूटी जलधारा। बुधवार को भी उद्गम स्थल पर खोदाई का काम जारी रहा • जागरण

नागिन, ईस्ट काली और फिर कालिंदी

अंतवाड़ा से मुजफ्फरनगर की 22 किमी की सीमा में यह नदी बल खाकर चलती थी। इसके पीछे कई जनश्रुतियां भी हैं जिसके बाद ही इसका नाम नागिन पड़ा था। मेरठ की सीमा में पहुंचते ही इसका नाम ईस्ट काली हो जाता है। यहां से फिर हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, कासगंज, एटा, फर्रुखाबाद तक काली के नाम से पहचाना जाता है फिर आगे यही कन्नौज में जाकर गंगा से मिल जाती है और इसे नया नाम मिलता है...कालिंदी। उद्गमस्थल से गंगा में मिलने तक की इसकी लंबाई 598 किमी है और इस नदी के किनारे लगभग 1200 गांव बसते हैं।

पुराने मानचित्रों में भी काली का है उल्लेख • सौ. नीर फाउंडेशन

578 किमी काली ईस्ट की है कुल लंबाई

9 जिले काली ईस्ट की राह में पड़ते हैं

1200 गांव काली नदी के किनारे बसे हुए हैं

1992 नदी के उद्गम स्थल को पाट दिया था

गलती का पश्चाताप कर रहा हूं

गांव के ही किसान मुकेश कुमार बताते हैं कि 1992 में उनके पिता ने आठ फीट मिट्टी का भराव कराकर इस नदी के स्रोत को पाट दिया था। नदी के किनारे उनकी 12 बीघा जमीन थी, 12 बीघा इसे पाट लिया लेकिन यह परिवार को फला नहीं। नदी पाटने के कुछ माह के अंदर ही उसी ट्रैक्टर के नीचे आकर पिता की असमय मृत्यु हो गई। मेरे विदेश जाने का वीजा तक लग चुका था, लेकिन सब बर्बाद हो गया। हमें आभास होने लगा था कि बड़ी गलती हो गई है। जब नदी को पुनर्जीवित करने की पहल हुई, उसी दिन मैंने ठान लिया। नदी की जमीन छोड़ दी और कारसेवा में जुट गया।

मुकेश कुमार •

नदी पूजन और गोष्ठी आज

काली नदी ईस्ट की जहां जलधारा फूटी है, खतौली के अंतवाड़ा गांव में उसी स्थान पर गुरुवार सुबह नदी पूजन और गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। नीर फाउंडेशन के रमन त्यागी ने बताया कि सुबह के समय ग्रामीण और आसपास के लोग सबसे पहले नदी पूजन में भाग लेंगे। नदी पूजन की खातिर पद्मश्री डा. अनिल जोशी और हरियाणा के किसान पद्मश्री कंवल सिंह चौहान भी पहुंच रहे हैं। इसके बाद पौधरोपण और श्रमदान होगा। सुबह आठ से 10 बजे तक इन गतिविधियों को पूरा करने के बाद गोष्ठी का भी आयोजन किया जाएगा। जो दोपहर 12 बजे तक चलेगी। इसमें संघ के पर्यावरण गतिविधियों के राष्ट्रीय सह संयोजक आरके जैन, स्थानीय जिला पंचायत सदस्य व अन्य गण्यमान्य लोग भी मौजूद रहेंगे।

डा. अनिल जोशी •

कंवल सिंह चौहान •

साफ-सफाई के बाद काली नदी ईस्ट को अंतवाड़ा गांव नदी को मिली धार • जागरण

नदी का पानी नहाने लायक बनाना है : एमडी

जासं, मेरठ: शहर से निकलने वाला सीवेज नालों के जरिए सीधे नदियों में बहाया जा रहा है। सीवेज को शुद्ध पानी में बदल कर नदी में छोड़ने के लिए वर्तमान 13 एसटीपी पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए नमामि गंगे योजना से 200 एमएलडी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाने की कवायद चल रही है। काली नदी का पानी नहाने लायक बनाने का लक्ष्य है।

बुधवार को मेरठ दौरे पर आए जल निगम के प्रबंध निदेशक विकास गोठलवाल ने बताया कि काली नदी के पानी को नहाने लायक बनाने के लिए शहर को शत-प्रतिशत सीवेज सिस्टम से युक्त करना होगा। विश्व बैंक इस प्रोजेक्ट में मदद करेगा। एमडी ने कहा कि शहर के तीन प्रमुख नाले आबू नाला एक, आबू नाला दो और ओडियन नाले को सीवेज प्लांट से जोड़ा जाएगा। ये नाले शहर का गंदा पानी सीधे काली नदी में ले जा रहे हैं। एमडी ने कहा कि नदी प्रदूषित है, जिससे जलीय जंतुओं को खतरा है। नदी का गंदा केमिकल युक्त पानी भूगर्भ तक पहुंच रहा है। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट ऐसी तकनीक का बनाया जाएगा जिससे शुद्ध हुए पानी में नहाया जा सकेगा। यही नहीं इस पानी के उपयोग के बारे में प्लान बनाया जा रहा है। जल्द ही जमीन का मसला हल करने के साथ इस प्लांट की नींव रखने का काम होगा। प्लांट के निर्माण से पहले यह भी देख रहे हैं कि शहर को वाकई कितनी क्षमता के प्लांट की जरूरत है।

बुधवार को मेरठ दौरे के दौरान काली नदी के बारे में अफसरों से जल निगम के एमडी विकास गोठलवाल ने अब तक की स्थिति पर चर्चा की • जागरण

अंतवाड़ा में फूटी जलधारा से निकले पानी का आचमन करते रमन त्यागी • जागरण

मेरठ में 36 गांवों से होकर बहती है काली

काली नदी ईस्ट मुजफ्फरनगर में नौ गांव से होकर गुजरती है जबकि मेरठ में 36 गांव इसके किनारे पड़ते हैं। मेरठ सीमा में नदी दबथल गांव से प्रवेश करती है। इसके बाद से इसमें बड़ी मात्रा में औद्योगिक कचरा और सीवरेज गिरता है।

यहां नीचे नदी बहती है, ऊपर नहर

100 फुट की ऊंचाई पर नदरई पुल को 1885 में इस तरह बनाया कि नहर की निकासी हो सके

150 साल पहले तक कासगंज इलाके में जलापूर्ति का एकमात्र साधन काली थी

15 सुरंग मार्ग कोठरियां भी हैं नदी और नहर के बीच, वहां के लोग इन्हें चोर कोठरियां कहते हैं

उद्गम से ही चार जिलों में कचरा ढोने वाली बन चुकी काली नदी का हाल अलीगढ़ के बाहरी इलाकों में देखकर कुछ राहत मिलती है। उम्मीद बढ़ जाती है कि पीछे अगर काली को बचा लिया जाए, तो आगे का रास्ता बेहद आसान हो जाएगा। **रवि प्रकाश तिवारी** की रिपोर्ट में जानिए अलीगढ़ और कासगंज में काली का हाल...

अलीगढ़ शहर में भी काली शहर के कचरे को ही ढोती दिखती है। औद्योगिक कचरे से लेकर सीवरेज का सीधे काली की धार में मिलना यहां भी बहुत बड़ी चुनौती है। लेकिन शहर से बाहर निकलते ही पानी का बहाव बढ़ने लगता है। वजह है काली में नहर का पानी आना। अलीगढ़ के ही कौड़ियागंज घाट की तस्वीर कुछ बदली हुई है। यहां नदी बहुत चौड़ी नहीं है, पानी भी गदला ही है लेकिन इसमें नाव चलते देखा। बेहद सुखद पल। करीब आठ-10 गांव के लोगों को कौड़ियागंज बाजार आने के लिए नाव से आना पड़ता है।

काली में नाव भी चलती है, कौड़ियागंज ने यह बता दिया। दोनों हाथ जोड़कर हम आगे चल पड़े कुछ और बढ़ी हुई उम्मीदों के साथ। अलीगढ़-कासगंज मार्ग पर ही एक पुल है। रुककर देखा तो काली नदी बह रही थी। ठीक सामने एक जर्जर पुल और उसके दोनों ओर पांच-पांच निकासी द्वार के दो शाखा पुल। इस पर आवाजाही बंद है। नदी में पानी कम लेकिन साफ था। पहली बार नदी का फैलाव दिखा। सीधे कहें तो अब तक नाला तक सिमटी काली को यहां आकर विस्तार मिल गया है। वहीं पर ठाकुर धाम हैं। पुजारी से जब जानना चाहा कि काली नदी का पुल कितना पुराना है? सवाल खत्म होने से पहले ही वे बोले, काली नहीं कालिंद्री कहिए। रही बात पुल की तो वह 150 से 200 साल पुराना है। नदी का बहाव इतना ज्यादा था कि इसके दोनों ओर छोटे-छोटे पुल बनाए गए थे ताकि अधिक पानी होने पर उसका बंटवारा हो जाए। लेकिन अब नदी की जमीन पर खेती होती है।

अगला हमारा पड़ाव कासगंज है। सीमा में पहुंचते ही दाहिने ओर नदरई डैम की ओर रास्ता मुड़ता है। कुछ दूरी तय करने पर ही दिखता है... ऊपर नहर बह रही है, नीचे नदी। इस पुल पर बनी कोठरियां स्वयं में अनूठी हैं। काली नदी से लगभग 100 फुट की ऊंचाई पर 1885 में पुल इस तरह से बनाया गया ताकि नहर की निकासी हो सके। नदी एवं नहर के बीच 15 सुरंग मार्ग कोठरियां भी हैं। इन्हें वहां के लोग चोर कोठरियां कहते हैं। बुजुर्ग हरिराम कहते हैं 150 साल पहले तक इस इलाके में जलापूर्ति का एकमात्र साधन काली थी, जिससे क्षेत्र के किसानों एवं अन्य लोगों को जलापूर्ति का अभाव रहता था। जलाभाव से पीड़ित लोगों की मांग पर ही अंग्रेजी हुकूमत ने यहां हजारा नहर बनवाई थी। कासगंज की यह तस्वीर बता रही थी कि काली नदी का महत्व क्या रहा है? वाकई कमाल की है काली, कई रंग हैं इसके।

कासगंज के कौड़ियागंज में काली नदी में चल रही है नाव● जागरण

कासगंज का नदरई डैम जहां ऊपर से नहर बह रही है और नीचे काली नदी। इस पुल पर आज भी वाहनों की आवाजाही होती है ● जागरण

नहर का पानी छूते ही अलीगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र में काली किस तरह से रंग बदलने लगती है, यह साफ दिखता है। मुजफ्फरनगर में भी नहर का पानी छूते, इसकी खातिर योजना तो बनाई गई, लेकिन आज तक उस पर अमल नहीं हुआ। जहां काली का उद्गम है, उसके पीछे से ही एक नहर आ रही है। अगर 100 मीटर में और काम हो जाए तो पीछे से नहर का पानी काली में गिरने लगे और यह मुजफ्फरनगर से ही लबालब होकर चले।

रमन त्यागी, निदेशक, नीर फाउंडेशन

तीन माह नहर से डलता है पानी

काली नदी में पानी बनाए रखने के लिए खतौली के पास 105 क्यूसेक पानी छोड़ने की योजना पर काम चल रहा है। शासन से प्रोजेक्ट मंजूर भी है लेकिन योजना सिरे नहीं चढ़ पा रही है। लेकिन काली के आगे बढ़ते ही इसमें नहर का पानी गिरता है और काली की तस्वीर भी बदलने लगती है। सिंचाई विभाग से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक सालभर में तीन महीने काली नदी में पानी डाला जाता है।

हापुड़ में 1000 क्यूसेक पानी डालता है

काली में नहर का पानी उस समय डाला जाता है जब बारिश के दिनों में पानी की सप्लाई बहुत ज्यादा हो जाती है और मांग कम। सिंचाई विभाग, मेरठ के अधीक्षण अभियंता विनोद मिश्रा बताते हैं कि बारिश के मौसम में 15 जून से 15 अक्टूबर तक मध्य गंग नहर चलती है। बिजनौर से यह नीचे बहती है। हापुड़ जिले में एक स्थान पर इन चार में से दो महीनों तक नहर का एक हजार क्यूसेक पानी काली नदी में डाला जाता है।

अलीगढ़ में 500 क्यूसेक पानी डलता है

खुर्जा से आगे अलीगढ़ की सीमा में अपर गंगा नहर से पानी तब-तब छोड़ा जाता है जब मांग कम होती है और सप्लाई उसकी तुलना में ज्यादा। यहां से 500 क्यूसेक पानी काली नदी में छोड़ा जाता है। इसकी कोई समयबद्धता नहीं है। सूत्रों के अनुसार अगर सालभर का ब्योरा लें तो सालभर में लगभग तीन माह नहर का पानी काली में गिरता है।

1885 में पुल की रखी गई थी नींव

कासगंज में अंग्रेजों द्वारा काली नदी पर बनाया गया आकर्षक डैम● जागरण

नदरई में बनाया गया पुल ब्रिटिश काल का यह पुल लगभग 130 वर्ष पुराना है। इसका निर्माण 1885 में शुरू हुआ था। चार वर्ष में इसका निर्माण सिंचाई विभाग के तत्कालीन मुख्य अभियंता एनडब्लू पी एवं कर्नल डब्लू एच्च ग्रेट हैड के निर्देशन में पूरा हुआ। इतिहास के जानकारों के मुताबिक ग्राम छावनी में अंग्रेजी हुकूमत के दौरान स्थानीय मुख्यालय हुआ करता था। यहां जिला मजिस्ट्रेट की हैसियत एवं उसके नुमाइंदे फौजी के रूप में निवास करते थे। इस इलाके में जलापूर्ति का एकमात्र साधन काली नदी थी। यहां के किसानों एवं अन्य लोगों को जलापूर्ति का अभाव रहता था। इस पुल की संरचना उत्कृष्ट कला का नमूना है। यह पुल आज भी काफी मजबूत है और वाहनों का आना-जाना भी रोजाना इस पुल से होता है।

अलीगढ़ और कासगंज के बीच पुराने पुल से गुजरती काली नदी। यहां नदी का बहाव बढ़ गया है और पानी भी काफी साफ दिखता है● जागरण

चूना पत्थर और अंग्रेजी ईंटे गवाह हैं

अलीगढ़ से कासगंज जाने के क्रम में एक पुराना पुल काली नदी के बहाव को बताने के लिए काफी है। इस पुल के नीचे पांच बड़े और 10 छोटे निकासी द्वार हैं। अब तो यह पुल आवाजाही के लिए बंद हो चुका है और उसके ठीक सामने से ही दूसरे पुल से लगभग 35 वर्षों से वाहन आते-जाते हैं। जर्जर हो चुके पुल पर बना चूना पत्थर और इसकी ईंटें 150 वर्ष से भी पुरानी हैं। जिन ईंटों का इस पुल में इस्तेमाल हुआ है, वह ईंटें मेरठ के सदर बाजार के कुछ भवनों में और लेखानगर के पीछे की सीमेंट्री में ईंटें मिलती हैं। यह सीमेंट्री 1810 में बनी थी। वैसे भी अंग्रेज इस तरह की ईंटों का इस्तेमाल सरकारी निर्माण में ही किया करते थे।

कौड़ियागंज बाजार आने-जाने के लिए नाव ही एकमात्र साधन है। जब भी नहर से नदी में पानी छोड़ा जाता है तो यहां पानी बढ़ जाता है। पानी न होने की स्थिति में दुर्गंध बहुत रहती है। जिला के आसपास काली नदी में पानी छोड़ा जाता है। आसपास के लगभग 10 गांव के लोगों का रास्ता यही है।

हरि सिंह, अलडडापुर, अलीगढ़

पुल पर लगी ब्रिटिश काल की ईंट ● जागरण

मुजफ्फरनगर में काली का निरीक्षण करते राज्य मंत्री कपिल देव अग्रवाल● सौ. सोशल मीडिया

काली नदी घाट का होगा सुंदरीकरण

जासं, मुजफ्फरनगर : व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास राज्यमंत्री कपिलदेव अग्रवाल ने शनिवार को अधिकारियों के साथ काली नदी घाट का निरीक्षण किया। उन्होंने एमडीए और नगर पालिका के अधिकारियों को निर्देश दिए कि घाट से काली माता मंदिर तक सफाई की विशेष व्यवस्था की जाए। प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं। माता के भक्तों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। एमडीए सचिव महेंद्र प्रसाद से कहा कि सुंदरीकरण का कार्य जल्द शुरू किया जाए। घाट को भव्य रूप दिया जाए। राज्यमंत्री ईदगाह पहुंचे, जहां गंदगी मिलने पर नगर पालिका के अधिकारियों पर नाराजगी जताई। नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आरएस राठी को फटकार लगाते हुए निर्देश दिए कि धार्मिक स्थलों के समीप साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए।

तटवर्ती गांवों में बांझपन का खतरा

शुक्राणु घटने की बढ़ गई है दर, गर्भाशय में अंडा बनने की प्रक्रिया भी हो रही है बाधित

रवि प्रकाश तिवारी ● मेरठ

काली नदी में प्रदूषण का आलम यह है कि मेरठ में इसके निकट के उन गांवों में बांझपन का खतरा बढ़ गया है जहां प्रदूषण का स्तर काफी अधिक है। काली में मौजूद हैवी मेटल्स न सिर्फ हार्मोन अवरोधक बन रहे हैं बल्कि इससे शुक्राणु घटने से लेकर डीएनए में विकार तक दिखने लगा है। कुछ मरीजों के सैंपल पर शोध के बाद वरिष्ठ एंड्रोलॉजिस्ट डा. सुनील जिंदल का कहना है कि केवल पुरुष ही नहीं कम उम्र की महिलाओं में भी जल जनित प्रदूषण से गर्भाशय में अंडे बनने की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

डा. जिंदल का कहना है कि दो-तीन वर्ष में काली नदी किनारे के गांवों के लोग बच्चे न होने की शिकायत बढ़ी है। इनकी चिकित्सकीय जांच में पाया गया कि वहां के मर्दों में हारमोन्स अवरोधक पैदा हो गए है तथा शुक्राणुओं की संख्या घट गई है। जो हैं, उनकी ताकत भी क्षीण हो गई थी। इन मर्दों में शुक्राणुओं की औसत संख्या घटकर डेढ़ से दो करोड़ शुक्राणु प्रति मिली रह गई है। साफ-सुथरे परिवेश में रहने वाले लोगों में शुक्राणुओं की संख्या चार करोड़ प्रति मिली से कम नहीं होती।

इनकी वजहों के बारे में जब जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि काली नदी के पानी में लोहा, शीशा, क्रोमियम की अत्यधिक मात्रा में मिल रहा है, जिससे यह दिक्कतें बढ़ी हैं। महिलाओं के मामले में पाया गया कि भारी तत्वों की वजह से उनके गर्भाशय में अंडे डेवलप नहीं हो पा रहे हैं और कई बार गर्भपात जैसी दिक्कतें पेश आती हैं। दरअसल, चिकित्सकों का कहना है कि शुक्राणुओं में साइटोप्लाज्म की मात्रा काफी कम होती है जिसकी वजह से बाहरी तत्व (हैवी मेटल्स) उन्हें आघात पहुंचाते हैं। बार-बार के आघात से डीएनए खराब होने का खतरा बढ़ जाता। क्रोमोजोम दूषित होता है जिसका असर आने पीढ़ी पर पड़ने का खतरा बना रहता है।

मेरठ के खरखौदा ब्लॉक के आढ़ गांव में प्रदूषित काली नदी और इसी के पानी से सिंचाई के लिए लगाया गया पंपिंग सेट ● जागरण

दूषित शुक्राणुओं का शोध अमेरिका में

डा. सुनील जिंदल का कहना है कि डीएनए विखंडन की समस्या के निदान की दिशा में अमेरिका के ओहियो स्थित क्लीवलैंड क्लिनिक, सेंटर फॉर मेल रिप्रोडक्शन के डा. अशोक अग्रवाल के साथ मिलकर दूषित शुक्राणुओं के प्रोटियोनॉमिक्स और डीएनए की जांच कर पता लगाया जाएगा कि शुक्राणु के कौन-कौन से प्रोटीन खराब हो रहे हैं, ताकि उसका सटीक उपचार किया जा सके।

शूटर दादियां भी करेंगी काली नदी का भ्रमण

जागरण संवाददाता, खतौली : काली नदी को पुनर्जीवित करने की मुहिम के रंग लाने के साथ प्रदेश पटल पर पहचान बना ली है। बागपत की प्रख्यात शूटर दादियां भी काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। रमन त्यागी ने बताया कि दोनों शूटर दादियां 13 दिसंबर को काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। नदी किनारे वन विकसित करने के लिए पौधारोपण किया गया है।

काली पर ग्रामीणों ने तैयार किया हवन कुंड : दूर-दराज के जनपदों से लोगों के काली नदी के दर्शन को पहुंचने से ग्रामीण भी उत्साहित है। इसके लिए वह नीर फाउंडेशन की सराहना कर रहे हैं। ग्रामीणों ने काली नदी के पास हवन कुंड तैयार किया है। काली नदी के तट पर ग्रामीण सामूहिक रूप से हवन किया करेंगे। सोमवार को भी ग्रामीणों से हवन किया।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम स्थल पर तैयार किया गया हवन कुंड ● जागरण

तट पर जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश : अंतवाड़ा गांव में काली नदी को पुनर्जीवित करने और पौधारोपण के अलावा ग्रामीण जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश दे रहे हैं। उद्गमस्थल तट के पास बनाई गई झोपड़ी के पास नशे के दूर रहने का बोर्ड लगाया है। इसमें लिखा है कि काली नदी तट पर नशा करके आना और यहां बैठकर नशा करना सख्त मना है।

काली नदी के उद्गम स्थल के पास लगा जीरो ड्रग्स अभियान का बोर्ड ● जागरण

अंतवाड़ा आने का शूटर प्रकाशो तोमर (ऊपर) व चंद्रो तोमर (नीचे) को निमंत्रण देते नीर फाउंडेशन के निदेशक रमन त्यागी ● सौजन्य नीर फाउंडेशन

उद्गम स्थल पर किसानों ने खाली की 145 बीघा जमीन, नदी को पुनर्जीवित करने को तन-मन-धन से जुटने का ऐलान

काली को करेंगे जीवित, खुद चलाएंगे फावड़ा

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

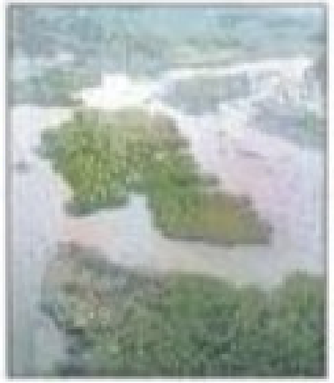

काली नदी को उद्गम स्थल से पुनर्जीवित कर उसे पुराना स्वरूप लौटाने के लिए सरकार-प्रशासन और समाज उठ खड़ा हुआ है। विभिन्न संगठनों, संस्थाओं ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभानी शुरू कर दी। इस नदी के लिए किसान भावनापूर्ण हो गए हैं। किसानों ने नदी के उद्गम स्थल पर 145 बीघा जमीन तो खाली कर ही थी, अब खुद फावड़ा उठाकर न सिर्फ नदी खोदेंगे और उसे जीवित करेंगे। किसानों ने ऐलान कर दिया कि जरूरत पड़ी तो किसान पैसा खर्च करने में भी पीछे नहीं हटेंगे।

काली नदी को उद्गम स्थल से पुनर्जीवित करने के लिए पहले बड़ी बाधा दिखाई दे रही थी कि नदी के करीब 145 बीघा जमीन पर किसानों का कब्जा था, लेकिन किसानों ने जमीन को एक ही झटके में खाली कर एक मिसाल पेश की। साथ ही नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने के लिए खुद भी कार्य में जुट गए। केंद्रीय राज्यमंत्री संजीव बालियान, विधायक खतौली विक्रम सिंह सैनी के

साथ ही मुजफ्फरनगर जिले के भाजपा नेताओं की काली नदी के लिए हर तरह से सेवा कार्य की घोषणा के बाद अंतवाड़ा के किसानों ने भी घोषणा कर दी कि वह नदी के लिए खुद फावड़ा संभाल लेंगे।

कुछ किसानों ने तो यहां तक ऐलान कर दिया कि जरूरत पड़ी तो प्रति बीघा एक हजार रुपये की दर से काली नदी को सेवा कार्य के लिए उपलब्ध करा देंगे। काली नदी के लिए सरकार और प्रशासन की मदद के अलावा यदि आर्थिक व अन्य को कोई भी जरूरत पड़ेगी तो वह पीछे नहीं हटेंगे। दूसरी ओर, केंद्रीय राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि वह जल्द दुबारा अधिकारियों के साथ अंतवाड़ा गांव में आएंगे और गांव के विकास के साथ ही नदी के उद्गम स्थल और काली नदी के पुनर्जीवन देने के लिए हर संभव कार्य में सहयोग देंगे।

नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने शूटर दादी से मुलाकात की। • हिन्दुस्तान

काली नदी के उद्गम स्थल पर आएंगी शूटर दादी

मेरठ। नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने शूटर दादी चंद्रो तोमर और प्रकाशो तोमर से मुलाकात की। उन्हें काली नदी के उद्गम स्थल पर चल रहे कार्यों की जानकारी दी। आग्रह किया कि वह भी काली नदी के उद्गम स्थल पर आएं और सेवा कार्यों का हिस्सा बनें। शूटर दादी ने काली नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने और उद्गम स्थल से ही पुनर्जीवन देने के लिए शुरू की मुहिम की सराहना की और कहा कि वह जल्द ही अंतवाड़ा आएंगी और काली नदी के उद्धार कार्य का हिस्सा बनेंगी।

सात तालाब-दो चेकडैम बनेंगे, पानी होगा रिचार्ज

खतौली | हमारे संवाददाता

अंतवाड़ा गांव में काली नदी के उद्गम स्थल पर ड्रोन से काम दे गई। पांच फुट की खुदाई पर ही पानी भी दिखाई दे चुका है। अब काली नदी को पुनर्जीवित करने के लिए आगे की कार्ययोजना बनाकर आज से इसके मुताबिक कार्य होगा। यहां पर करीब सात तालाब और दो चेकडैम बनाए जाएंगे। ताकि पानी रिचार्ज हो। स्टेप बनाने का कार्य होगा।

काली नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने के लिए अंतवाड़ा गांव के साथ ही आसपास के इलाकों के लोग और समाज उठ खड़ा हुआ है। हालांकि अब केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान भी काली नदी को पुनर्जीवन दिलाने में अपना हर संभव योगदान देंगे। इसके लिए वह घोषणा कर चुके हैं। नदी और जल संरक्षण के लिए कार्य करने वाली संस्थाएं मुहिम में अपना सहयोग दे रही हैं। नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी पिछले दो महीनों से खासतौर पर काली नदी को लक्ष्य बनाकर कार्य कर रहे हैं। अब काली नदी को पुनर्जीवित करने के लिए आगे कार्य पूरी प्लानिंग के तहत होगा। नदी के उद्गम स्थल पर किसानों ने 145 बीघा जमीन को खाली करके एक बड़ी मिसाल कायम की है। यहां पौधारोपण का कार्य शुरू कर दिया। अब उद्गम स्थल को खतौली नहर से जोड़ने का कार्य किया जाना है। इसके लिए सिंचाई विभाग के साथ प्रशासनिक व अन्य अधिकारियों के साथ नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी इसमें शामिल होंगे।

काली नदी के उद्गम स्थल पर आज से तालाब बनाने का कार्य शुरू होगा। बताया गया कि यहां पर सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बैठक के बाद कम से कम सात तालाब बनाए जाएंगे। तालाबों को लेकर पहले अधिकारियों और विशेषज्ञों के साथ विस्तार से चर्चा होगी। इसके साथ ही दो चेकडैम बनेंगे। स्टेप बनाने का काम भी किया जाएगा। अब काली नदी के उद्धार कार्य में फोकस है कि तालाब बनें और वह पानी से लबालब हों। यहां पर पौधे रोपकर जंगल विकसित किया जाएगा। दूर तक हरियाली दिखेगी। मानव का यहां बसेरा का सबब बनेगा।

नीर फाउंडेशन निदेशक रमनकांत त्यागी का कहना है अब काली नदी के उद्गम स्थल से लेकर नदी को पुनर्जीवन देने के लिए तेजी से कार्य होंगे। अभी सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की जाएगी। इसमें कई योजनाओं पर कार्य होगा। इसके बाद प्रशासन और सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर कार्य को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। अब काली नदी के उद्गम स्थल को नहर से जोड़ने और नहर का पानी उद्गम स्थल तक लाने की योजना को अमलीजामा पहनाया जाना है।

यहां तो काली में आचमन करते हैं लोग

अद्भुत, अकल्पनीय... काली को कन्नौज में दूर से बलखाते हुए गंगा में संगम का दृश्य देखकर यही शब्द कौंधे। मुजफ्फरनगर से शुरू हुई यात्रा की थकान काली को देखते ही काफूर हो गई थी। जिस काली के पास से गुजरने में सांस रोकनी पड़ती है, कन्नौज के मेहंदीघाट पर श्रद्धालु स्नान करते हैं। आचमन करते हैं, पूजा-अर्चना होती है। **रवि प्रकाश तिवारी** की इस रिपोर्ट में कासगंज के कन्नौज तक के काली के सफर के साथी बनिए...

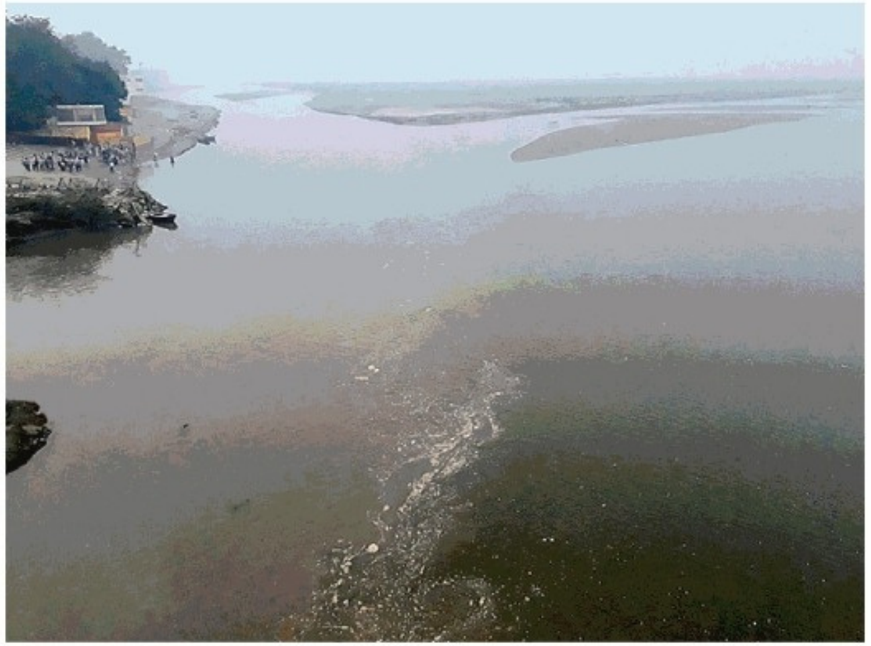

मेहंदीघाट पर बायीं ओर से आ रही काली, दाहिनी ओर से गंगा के संगम का सुखद दृश्य • जागरण

कासगंज पहुंचते-पहुंचते काली की गंदगी कुछ धुली जरूर है लेकिन यहां भी नहर से आगे नदी में औद्योगिक कचरा काली को बोझिल करता है। फिर भी मेरठ-मुजफ्फरनगर की तुलना में सेहत सुधरी हुई है। कासगंज के आगे बढ़ते ही एटा के समानांतर काली आगे चलकर फर्रुखाबाद में प्रवेश करती है। यहां एक तट इसका फर्रुखाबाद तो दूसरा कन्नौज को छूता है। यहां काली पहले से थोड़ी साफ होती है।

टेढ़े-मेढ़े रास्तों से काली का सफर लगभग 550 किमी का पूरा हो चुका है। गंगा नजदीक है, लिहाजा काली में भी गंगा से मिलन की एक अजब बेचैनी दिखती है। बहाव की रफ्तार पग-पग पर बढ़ने लगती है। फर्रुखाबाद के ऐतिहासिक राम आश्रम घाट, खुदागंज से जब काली गुजरती है तो यहां भी आभाष होता है कि काली का अतीत कितना वैभवशाली रहा होगा। यहीं के रामानंद कटियार कहते हैं कि काली नदी की आज पहचान इसके पानी के रंग से पूरी तरह मेल खाती है। इस तस्वीर को बदलने की जरूरत है। हम कोशिश कर रहे हैं, लेकिन पीछे से प्रयास हो तो हमारी भी कोशिश कामयाब हो।

अब हम बढ़ते हैं कन्नौज की ओर। मेहंदीघाट हमारा अगला पड़ाव है। सांझ का समय, रोशनी धीरे-धीरे कम हो रही थी, ऊपर से बादलों की घेराबंदी मानों सूर्यास्त के समय को और पाट रही हो। खैर, मेहंदीघाट पर पहुंचने से पहले हम पुल पर चले गए, जहां दूर से काली आती दिखती है और पुल के ठीक नीचे उसका मिलना गंगा से होता है। दोनों नदियों के मिलन की गवाह पानी की लकीर भी यहां स्पष्ट नजर आती है। काली का यह स्वरूप मेरठ-मुजफ्फरनगर के लोगों के लिए किसी कल्पना से कम नहीं। लेकिन यही सच्चाई है।

पुल से ही नजर दौड़ाया तो देखा, लोग उस समय भी स्नान कर रहे थे। औरतें पूजा-पाठ में व्यस्त थीं। काली में स्नान, किनारे पर पूजा यह सबकुछ दिखा कन्नौज के घाट पर। घाट पर पहुंचने की ललक बढ़ गई। यहां मिले अजय पांडेय ने बताया कि चूंकि हमारी ओर घाट में काली ही बहती हैं, तो हम इस ओर ही स्नान-ध्यान करते हैं। वैसे भी गंगा में मिलकर सब गंगा ही तो है। बातचीत खत्म होते-होते अंधेरा पसरने लगा था। नदी में तैरते बत्तखों का झुंड पुल की रोशनी पड़ते ही और मनोरम लगने लगा। वास्तव में यही असली काली है। अगर काली यहां ऐसी है, तो शुरुआत में वैसी क्यों? ऐसा लगा मानों यह सवाल स्वयं काली का है।

> कन्नौज पहुंचने से पहले तक काली नदी का पानी साफ नहीं हो पाता। इसमें कासगंज में भी नाला गिरता है। पीछे से गजरौला की चमड़ा इकाईयों का दूषित पानी भी इसमें गिरता है। यही वजह है कि काली की स्थिति नहीं सुधर पा रही है। हम गंगा सफाई में आठ साल से जुटे हैं लेकिन समझ में आ गया है कि जब तक सहायक नदियां साफ नहीं होंगी, गंगा भी साफ नहीं होगी। यही वजह है कि अब काली के उद्धार का भी बीड़ा उठाना पड़ेगा।
>
>
>
> -रामानंद कटियार, फर्रुखाबाद

> यहां काली और गंगा का मिलन होता है। हमें पता नहीं मेरठ या बुलंदशहर में काली की कैसी स्थिति है। हमारे यहां तो काली बिल्कुल साफ है और काली में पूरा मेहंदीघाट स्नान करता है। यहां हमेशा पानी लबालब रहता है। पीछे की गंदगी को जरूर साफ करना चाहिए। नदियां नहीं होंगी तो हम और आप भी नहीं रह पाएंगे।
>
>
>
> राहुल शुक्ला, मेहंदीघाट-कन्नौज

> कन्नौज में काली की जो तस्वीर है, वह हम सभी के लिए सीख है। एक नदी जिसे हमने अपने शहर में मार दिया, वह अगर दूसरे जिले में गंगा में समाने से पहले अपने यौवन पर आ जाती है, यह हमारी गलती और खामियों को दर्शाता है। समाज के साथ शासन-प्रशासन को भी गंभीरता से इस दिशा में विचार करना होगा ताकि कन्नौज जैसी काली मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलंदशहर में भी बहे। जब यह नदी बहेगी तो समृद्धि भी लाएगी।
>
>
>
> रमन त्यागी, निदेशक- नीर फाउंडेशन

शाम ढलने के बाद मेहंदीघाट पर गंगा तट पर भोजन की तलाश में बत्तख। काली नदी और गंगा के संगम पर विशाल पुल • जागरण

काली को हरा-भरा करने में जुटे ग्रामीण

जासं, खतौली : काली नदी को पुनर्जीवित करने की मुहिम रंग लाने लगी है। काली नदी की सेवा में ग्रामीण जी जान से जुट गए हैं। रविवार को ग्रामीणों ने काली नदी के उद्गमस्थल पर पौधारोपण किया। इस कार्य में बुजुर्गों से लेकर बच्चों तक ने भागीदारी की। नीर फाउंडेशन ने काली नदी को पुनः जिंदा करने का बीड़ा उठाया है। गांव अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गमस्थल पर खुदाई का कार्य चल रहा है। अब इस मुहिम से लोग जुड़ रहे हैं। नदी किनारे वन विकसित किया जाना है।

इसके लिए पौधारोपण किया जाना है। अंतवाड़ा निवासी सतीश कुमार, ओमवीर, मूलचंद पटेल, किरणपाल, दिनेश, भूरा, जसवीर, निक्की भड़ाना आदि ने नदी के उद्गमस्थल पर पौधे रोपे। लोगों ने पौधे रोपने के साथ उनकी देखभाल का संकल्प भी लिया।

नदी के दर्शन को कानपुर व बागपत से पहुंचे लोग

काली नदी को जिंदा करने में सहयोग के लिए दैनिक जागरण में का प्रयास लोगों के दिलों में उतर रहा है। दूर-दराज के जनपदों से लोग काली नदी के दर्शन को पहुंच रहे हैं। रविवार को बागपत और कानपुर के लोग नदी को देखने अंतवाड़ा पहुंचे। नदी के उद्गमस्थल पर स्वच्छ पानी देख वे खुश नजर आए।

खतौली के गांव अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गमस्थल पर पौधे रोपते लोग • जागरण

काली का कायाकल्प

काली नदी को साफ करेंगे अपनी गलती माफ करेंगे

अंत...
गंग...

तटवर्ती गांवों में बांझपन का ख...

शुक्राणु घटने की बढ़ गई है दर, गर्भाशय में अंडा बनने की प्रक्रिया भी हो...

रवि प्रकाश तिवारी • मेरठ

काली नदी में प्रदूषण का आलम यह है कि मेरठ में इसके निकट के उन गांवों में बांझपन का खतरा बढ़ गया है जहां प्रदूषण का स्तर काफी अधिक है। काली में मौजूद हैवी मेटल्स न सिर्फ हार्मोन अवरोधक बन रहे हैं बल्कि इससे शुक्राणु घटने से लेकर डीएनए में विकार तक दिखने लगा है। कुछ मरीजों के सैंपल पर शोध के बाद वरिष्ठ एंड्रोलॉजिस्ट डा. सुनील जिंदल का कहना है कि केवल पुरुष ही नहीं कम उम्र की महिलाओं में भी जल जनित प्रदूषण से गर्भाशय में अंडे बनने की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

डा. जिंदल का कहना है कि दो-तीन वर्ष में काली नदी किनारे के गांवों के लोग बच्चे न होने की शिकायत बढ़ी है। इनकी चिकित्सकीय जांच में पाया गया कि यहां के मर्दों में हारमोन्स अवरोधक पैदा हो गए है तथा शुक्राणुओं की संख्या घट गई है। जो हैं, उनकी ताकत भी क्षीण हो गई थी। इन मर्दों में शुक्राणुओं की औसत संख्या घटकर डेढ़ से दो करोड़ शुक्राणु प्रति मिली रह गई है। साफ-सुथरे परिवेश में रहने वाले लोगों में शुक्राणुओं की संख्या चार करोड़ प्रति मिली से कम नहीं होती।

इनकी वजहों के बारे में जब जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि काली नदी के पानी में लोहा, शीशा, क्रोमियम की अत्यधिक मात्रा में मिल रहा है, जिससे यह दिक्कतें बढ़ी हैं। महिलाओं के मामले में पाया गया कि भारी तत्वों की वजह से उनके गर्भाशय में अंडे डेवलप नहीं हो पा रहे हैं और कई बार गर्भपात जैसी दिक्कतें पेश आती हैं। दरअसल, चिकित्सकों का कहना है कि शुक्राणुओं

मेरठ के खरखौदा ब्लॉक के आढ़ गांव में प्रदूषित काली नदी और इसी के पानी से सिंचाई के लिए लगाया गया पंपिंग सेट • जागरण

दूषित शु...
अमेरिक...

डा. सुनील...
का कहना...
डीएनए वि...
की समस्या...
निदान की...
में अमेरिक...
के ओहिया...
सेंटर फॉर...
अशोक अ...
शुक्राणुओं...
डीएनए की...
कि शुक्राणु...
खराब हो र...
उपचार कि...

में साइटोप...
होती है जि...
(हैवी मेट...
बार-बार...
होने का ख...
दूषित होता...
पर पड़ने व...

शूटर दादियां भी करेंगी काली नदी का भ्रमण

जागरण संवाददाता, खतौली : काली नदी को पुनर्जीवित करने की मुहिम के रंग लाने के साथ प्रदेश पटल पर पहचान बना ली है। बागपत की प्रख्यात शूटर दादियां भी काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। रमन त्यागी ने बताया कि दोनों शूटर दादियां 13 दिसंबर को काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। नदी किनारे वन विकसित करने के लिए पौधारोपण किया गया है।

काली पर ग्रामीणों ने तैयार किया हवन कुंड : दूर-दराज के जनपदों से लोगों के काली नदी के दर्शन को पहुंचने से ग्रामीण भी उत्साहित है। इसके लिए वह नीर फाउंडेशन की सराहना कर रहे हैं। ग्रामीणों ने काली नदी के पास हवन कुंड तैयार किया है। काली नदी के तट पर ग्रामीण सामूहिक रूप से हवन किया करेंगे। सोमवार को भी ग्रामीणों से हवन किया।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम स्थल पर तैयार किया गया हवन कुंड • जागरण

तट पर जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश : अंतवाड़ा गांव में काली नदी को पुनर्जीवित करने और पौधारोपण के अलावा ग्रामीण जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश दे रहे हैं। उद्गमस्थल तट के पास बनाई गई झोपड़ी के पास नशे के दूर रहने का बोर्ड लगाया है। इसमें लिखा है कि काली नदी तट पर नशा करके आना और यहां बैठकर नशा करना सख्त मना है।

काली नदी के उद्गम स्थल के पास लगा जीरो ड्रग्स अभियान का बोर्ड • जागरण

अंतवाड़ा अ...
(ऊपर) व...
देते नीर फ...
त्यागी • र...

उद्गम स्थल पर किसानों ने खाली की 145 बीघा जमीन, नदी को पुनर्जीवित करने को तन-मन-धन से जुटने का ऐलान

काली को करेंगे जीवित, खुद चलाएंगे फावड़ा

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

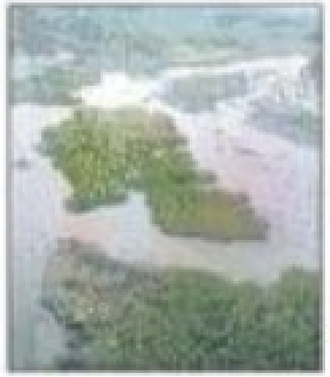

काली नदी को उद्गम स्थल से पुनर्जीवित कर उसे पुराना स्वरूप लौटाने के लिए सरकार-प्रशासन और समाज उठ खड़ा हुआ है। विभिन्न संगठनों, संस्थाओं ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभानी शुरू कर दी। इस नदी के लिए किसान भावनात्मक हो गए हैं। किसानों ने नदी के उद्गम स्थल पर 145 बीघा जमीन तो खाली कर ही दी, अब खुद फावड़ा उठाकर न सिर्फ नदी खोदेंगे और उसे जीवित करेंगे। किसानों ने ऐलान कर दिया कि जरूरत पड़ी तो किसान पैसा खर्च करने में भी पीछे नहीं हटेंगे।

काली नदी को उद्गम स्थल से पुनर्जीवित करने के लिए पहले बड़ी बाधा दिखाई दे रही थी कि नदी के करीब 145 बीघा जमीन पर किसानों का कब्जा था, लेकिन किसानों ने जमीन को एक ही झटके में खाली कर एक मिसाल पेश की। साथ ही नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने के लिए खुद भी कार्य में जुट गए। केंद्रीय राज्यमंत्री संजीव बालियान, विधायक खतौली विक्रम सिंह सैनी के

साथ ही मुजफ्फरनगर जिले के भाजपा नेताओं को काली नदी के लिए हर तरह से सेवा कार्य की घोषणा के बाद अंतवाड़ा के किसानों ने भी घोषणा कर दी कि वह नदी के लिए खुद फावड़ा संभाल लेंगे।

कुछ किसानों ने तो यहां तक ऐलान कर दिया कि जरूरत पड़ी तो प्रति बीघा एक हजार रुपये की दर से काली नदी को सेवा कार्य के लिए उपलब्ध करा देंगे। काली नदी के लिए सरकार और प्रशासन की मदद के अलावा यदि आर्थिक या अन्य को कोई भी जरूरत पड़ेगी तो वह पीछे नहीं हटेंगे। दूसरी ओर, केंद्रीय राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि वह जल्द दुबारा अधिकारियों के साथ अंतवाड़ा गांव में आएंगे और गांव के विकास के साथ ही नदी के उद्गम स्थल और काली नदी के पुनर्जीवन देने के लिए हर संभव कार्य में सहयोग देंगे।

नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने शूटर दादी से मुलाकात की। • हिन्दुस्तान

काली नदी के उद्गम स्थल पर आएंगी शूटर दादी

मेरठ। नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी ने शूटर दादी चंद्रो तोमर और प्रकाशी तोमर से मुलाकात की। उन्हें काली नदी के उद्गम स्थल पर चल रहे कार्य की जानकारी दी। आग्रह किया कि वह भी काली नदी के उद्गम स्थल पर आएं और सेवा कार्य का हिस्सा बनें। शूटर दादी ने काली नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने और उद्गम स्थल से ही पुनर्जीवन देने के लिए शुरू की मुहिम की सराहना की और कहा कि वह जल्द ही अंतवाड़ा आएंगी और काली नदी के उद्धार कार्य का हिस्सा बनेंगी।

सात तालाब-दो चेकडैम बनेंगे, पानी होगा रिचार्ज

खतौली | हमारे संवाददाता

अंतवाड़ा गांव में काली नदी के उद्गम स्थल पर हलचल तो बना दी गई। पांच फुट की खुदाई पर ही पानी भी दिखाई दे चुका है। अब काली नदी को पुनर्जीवित करने के लिए आगे की कार्ययोजना बनाकर आज से उसके मुताबिक कार्य होगा। यहां पर करीब सात तालाब और दो चेकडैम बनाए जाएंगे। ताकि पानी रिचार्ज हो। स्टॉप बनाने का कार्य होगा।

काली नदी को पुराने स्वरूप में लौटाने के लिए अंतवाड़ा गांव के साथ ही आसपास के इलाकों के लोग और समाज उठ खड़ा हुआ है। हालांकि अब केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान भी काली नदी को पुनर्जीवित दिलाने में अपना हर संभव योगदान देंगे। इसके लिए वह घोषणा कर चुके हैं। नदी और जल संरक्षण के लिए कार्य करने वाली संस्थाएं मुहिम में अपना सहयोग दे रही हैं। नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी पिछले दो महीनों से व्यक्तिगत तौर पर काली नदी को स्वच्छ बनाकर कार्य कर रहे हैं। अब काली नदी को पुनर्जीवित करने के लिए आगे कार्य पूरी प्लानिंग के तहत होगा। नदी के उद्गम स्थल पर किसानों ने 145 बीघा जमीन को खाली करके एक बड़ी मिसाल कायम की है। यहां पौधारोपण का कार्य शुरू कर दिया। अब उद्गम स्थल को खतौली नहर से जोड़ने का कार्य किया जाना है। इसके लिए सिंचाई विभाग के साथ प्रशासनिक व अन्य अधिकारियों के साथ नीर फाउंडेशन के निदेशक रमनकांत त्यागी इसमें शामिल होंगे।

काली नदी के उद्गम स्थल पर आज से तालाब बनाने का कार्य शुरू होगा। बताया गया कि यहां पर सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बैठक के बाद कम से कम सात तालाब बनाए जाएंगे। तालाबों को लेकर पहले अधिकारियों और विशेषज्ञों के साथ विचार से चर्चा होगी। इसके साथ ही दो चेकडैम बनेंगे। स्टॉप बनाने का काम भी किया जाएगा। अब काली नदी के उद्धार कार्य में फोकस है कि तालाब बनें और वह पानी से लबालब हों। यहां पर पौधे रोपकर जंगल विकसित किया जाएगा। दूर तक हरियाली दिखेगी। बरसात का यहां बारिश का संचय बनेगा।

नीर फाउंडेशन निदेशक रमनकांत त्यागी का कहना है अब काली नदी के उद्गम स्थल से लेकर नदी को पुनर्जीवन देने के लिए तेजी से कार्य होंगे। अभी सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की जाएगी। इसमें कई योजनाओं पर कार्य होगा। इसके बाद प्रशासन और सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर कार्य को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। अब काली नदी के उद्गम स्थल को नहर से जोड़ने और नहर का पानी उद्गम स्थल तक लाने की योजना को अमलीजामा पहनाया जाना है।

तालाब गंदगी से अटने के कारण निकासी बाधित

गंदगी से अटा पड़ा तालाब। ■ छाया : जनवाणी

● जनवाणी संवाददाता, सरधना

नगर के बूढ़ा बाबू मोहल्ले में तालाब गंदगी से पूरी तरह अटा पड़ा है। आरोप है कि सफाईकर्मी ही तालाब में कूड़ा डालते हैं। कई बार शिकायत करने के बाद भी अधिकारी सुनने को तैयार नहीं हैं। बरसात के चलते हालात और खराब हो गए हैं। दूषित पानी लोगों के घरों में भरने लगा है। लोगों ने पालिका से शीघ्र सफाई व्यवस्था दुरुस्त कराने की मांग की है।

नगर के अधिकांश तालाबों पर लोगों ने कब्जा जमा लिया है। इसके बाद भी पालिका अधिकारियों की नींद नहीं टूट रही है। बूढ़ा बाबू मोहल्ला स्थित तालाब का अस्तित्व भी खत्म होता जा रहा है। तालाब गंदगी से पूरी तरह अटा पड़ा है। लोगों का आरोप है कि सफाईकर्मी ही तालाब में कूड़ा डालकर जाते हैं। इस कारण बस्ती के दूषित पानी की निकासी नहीं हो पा रही है। ऐसे में दूषित पानी लोगों के घरों में भर रहा है। बरसात का मौसम चलने के कारण हालात और खराब हो गए हैं। गंदगी और जलभराव के कारण बस्ती में बीमारियों ने पैर पसारने शुरू कर दिए हैं। कई बार शिकायत करने के बाद भी अधिकारी सुनने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोगों ने पालिका से शीघ्र तालाब की सफाई कराने की मांग की।

काली का कायाकल्प

काली नदी को साफ करेंगे अपनी गलती माफ करेंगे | अंतवाड़ा से वही जो धारा गंगा मां का वनी सहारा

तटवर्ती गांवों में बांझपन का खतरा

शुक्राणु घटने की बढ़ गई है दर, गर्भाशय में अंडा बनने की प्रक्रिया भी हो रही है बाधित

रवि प्रकाश तिवारी ● मेरठ

मेरठ के खरखौदा ब्लॉक के आढ़ गांव में प्रदूषित काली नदी और इसी के पानी से सिंचाई के लिए लगाया गया पंपिंग सेट ● जागरण

काली नदी में प्रदूषण का आलम यह है कि मेरठ में इसके निकट के उन गांवों में बांझपन का खतरा बढ़ गया है जहां प्रदूषण का स्तर काफी अधिक है। काली में मौजूद हैवी मेटल्स न सिर्फ हार्मोन अवरोधक बन रहे हैं बल्कि इससे शुक्राणु घटने से लेकर डीएनए में विकार तक दिखने लगा है। कुछ मरीजों के सैंपल पर शोध के बाद वरिष्ठ एंड्रोलॉजिस्ट डा. सुनील जिंदल का कहना है कि केवल पुरुष ही नहीं कम उम्र की महिलाओं में भी जल जनित प्रदूषण से गर्भाशय में अंडे बनने की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

डा. जिंदल का कहना है कि दो-तीन वर्ष में काली नदी किनारे के गांवों के लोग बच्चे न होने की शिकायत बढ़ी है। इनकी चिकित्सकीय जांच में पाया गया कि यहां के मर्दों में हारमोन्स अवरोधक पैदा हो गए है तथा शुक्राणुओं की संख्या घट गई है। जो हैं, उनकी ताकत भी क्षीण हो गई थी। इन मर्दों में शुक्राणुओं की औसत संख्या घटकर डेढ़ से दो करोड़ शुक्राणु प्रति मिली रह गई है। साफ-सुथरे परिवेश में रहने वाले लोगों में शुक्राणुओं की संख्या चार करोड़ प्रति मिली से कम नहीं होती।

इनकी वजहों के बारे में जब जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि काली नदी के पानी में लोहा, शीशा, क्रोमियम की अत्यधिक मात्रा में मिल रहा है, जिससे यह दिक्कतें बढ़ी हैं। महिलाओं के मामले में पाया गया कि भारी तत्वों की वजह से उनके गर्भाशय में अंडे डेवलप नहीं हो पा रहे हैं और कई बार गर्भपात जैसी दिक्कतें पेश आती हैं।

दरअसल, चिकित्सकों का कहना है कि शुक्राणुओं में साइटोप्लाज्म की मात्रा काफी कम होती है जिसकी वजह से बाहरी तत्व (हैवी मेटल्स) उन्हें आघात पहुंचाते हैं। बार-बार के आघात से डीएनए खराब होने का खतरा बढ़ जाता। क्रामोजोम भी दूषित होता है जिसका असर आने पीढ़ियों पर पड़ने का खतरा बना रहता है।

दूषित शुक्राणुओं का शोध अमेरिका में

डा. सुनील जिंदल का कहना है कि डीएनए विखंडन की समस्या के निदान की दिशा में अमेरिका के ओहियो स्थित क्लीवलैंड क्लिनिक, सेंटर फॉर मेल रिप्रोडक्शन के डा. अशोक अग्रवाल के साथ मिलकर दूषित शुक्राणुओं के प्रोटियोनॉमिक्स और डीएनए की जांच कर पता लगाया जाएगा कि शुक्राणु के कौन-कौन से प्रोटीन खराब हो रहे हैं, ताकि उसका सटीक उपचार किया जा सके।

शूटर दादियां भी करेंगी काली नदी का भ्रमण

जागरण संवाददाता, खतौली : काली नदी को पुनर्जीवित करने की मुहिम के रंग लाने के साथ प्रदेश पटल पर पहचान बना ली है। बागपत की प्रख्यात शूटर दादियां भी काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। रमन त्यागी ने बताया कि दोनों शूटर दादियां 13 दिसंबर को काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। नदी किनारे वन विकसित करने के लिए पौधारोपण किया गया है।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम स्थल पर तैयार किया गया हवन कुंड ● जागरण

काली पर ग्रामीणों ने तैयार किया हवन कुंड

दूर-दराज के जनपदों से लोगों के काली नदी के दर्शन को पहुंचने से ग्रामीण भी उत्साहित है। इसके लिए वह नीर फाउंडेशन की सराहना कर रहे हैं। ग्रामीणों ने काली नदी के पास हवन कुंड तैयार किया है। काली नदी के तट पर ग्रामीण सामूहिक रूप से हवन किया करेंगे। सोमवार को भी ग्रामीणों से हवन किया।

तट पर जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश

अंतवाड़ा गांव में काली नदी को पुनर्जीवित करने और पौधारोपण के अलावा ग्रामीण जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश दे रहे हैं। उद्गमस्थल तट के पास बनाई गई झोपड़ी के पास नशे के दूर रहने का बोर्ड लगाया है। इसमें लिखा है कि काली नदी तट पर नशा करके आना और वहां बैठकर नशा करना सख्त मना है।

काली नदी के उद्गम स्थल के पास लगा जीरो ड्रग्स अभियान का बोर्ड ● जागरण

अंतवाड़ा आने का शूटर प्रकाशो तोमर (ऊपर) व चंद्रो तोमर (नीचे) को निमंत्रण देते नीर फाउंडेशन के निदेशक रमन त्यागी ● सौजन्य नीर फाउंडेशन

काली का कायाकल्प

काली नदी को साफ करेंगे अपनी गलती माफ करेंगे | अंतवाड़ा से

तटवर्ती गांवों में बांझपन का ख

शुक्राणु घटने की बढ़ गई है दर, गर्भाशय में अंडा बनने की प्रक्रिया भी हो रही

काली
बुला रही है

रवि प्रकाश तिवारी ● मेरठ

मेरठ के खरखौदा ब्लॉक के आढ़ गांव में प्रदूषित काली नदी और इसी के पानी से सिंचाई के लिए लगाया गया पंपिंग सेट ● जागरण

काली नदी में प्रदूषण का आलम यह है कि मेरठ में इसके निकट के उन गांवों में बांझपन का खतरा बढ़ गया है जहां प्रदूषण का स्तर काफी अधिक है। काली में मौजूद हैवी मेटल्स न सिर्फ हार्मोन अवरोधक बन रहे हैं बल्कि इससे शुक्राणु घटने से लेकर डीएनए में विकार तक दिखने लगा है। कुछ मरीजों के सैंपल पर शोध के बाद वरिष्ठ एंड्रोलॉजिस्ट डा. सुनील जिंदल का कहना है कि केवल पुरुष ही नहीं कम उम्र की महिलाओं में भी जल जनित प्रदूषण से गर्भाशय में अंडे बनने की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

डा. जिंदल का कहना है कि दो-तीन वर्ष में काली नदी किनारे के गांवों के लोग बच्चे न होने की शिकायत बढ़ी है। इनकी चिकित्सकीय जांच में पाया गया कि यहां के मर्दों में हारमोन्स अवरोधक पैदा हो गए है तथा शुक्राणुओं की संख्या घट गई है। जो हैं, उनकी ताकत भी क्षीण हो गई थी। इन मर्दों में शुक्राणुओं की औसत संख्या घटकर डेढ़ से दो करोड़ शुक्राणु प्रति मिली रह गई है। साफ-सुथरे परिवेश में रहने वाले लोगों में शुक्राणुओं की संख्या चार करोड़ प्रति मिली से कम नहीं होती।

इनकी वजहों के बारे में जब जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि काली नदी के पानी में लोहा, शीशा, क्रोमियम की अत्यधिक मात्रा में मिल रहा है, जिससे यह दिक्कतें बढ़ी हैं। महिलाओं के मामले में पाया गया कि भारी तत्वों की वजह से उनके गर्भाशय में अंडे डेवलप नहीं हो पा रहे हैं और कई बार गर्भपात जैसी दिक्कतें पेश आती हैं। दरअसल, चिकित्सकों का कहना है कि शुक्राणुओं

दूषित शुक्राणुओं अमेरिका में

शूटर दादियां भी करेंगी काली नदी का भ्रमण

जागरण संवाददाता, खतौली : काली नदी को पुनर्जीवित करने की मुहिम के रंग लाने के साथ प्रदेश पटल पर पहचान बना ली है। बागपत की प्रख्यात शूटर दादियां भी काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। रमन त्यागी ने बताया कि दोनों शूटर दादियां 13 दिसंबर को काली नदी के उद्गम स्थल का भ्रमण करेंगी। नदी किनारे वन विकसित करने के लिए पौधारोपण किया गया है।

काली पर ग्रामीणों ने तैयार किया हवन कुंड : दूर-दराज के जनपदों से लोगों के काली नदी के दर्शन को पहुंचने से ग्रामीण भी उत्साहित है। इसके लिए वह नीर फाउंडेशन की सराहना कर रहे हैं। ग्रामीणों ने काली नदी के पास हवन कुंड तैयार किया है। काली नदी के तट पर ग्रामीण सामूहिक रूप से हवन किया करेंगे। सोमवार को भी ग्रामीणों से हवन किया।

अंतवाड़ा में काली नदी के उद्गम स्थल पर तैयार किया गया हवन कुंड ● जागरण

तट पर जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश : अंतवाड़ा गांव में काली नदी को पुनर्जीवित करने और पौधारोपण के अलावा ग्रामीण जीरो ड्रग्स अभियान का भी संदेश दे रहे हैं। उद्गमस्थल तट के पास बनाई गई झोपड़ी के पास नशे के दूर रहने का बोर्ड लगाया है। इसमें लिखा है कि काली नदी तट पर नशा करके आना और वहां बैठकर नशा करना सख्त मना है।

काली नदी के उद्गम स्थल के पास लगा जीरो ड्रग्स अभियान का बोर्ड ● जागरण